जमना

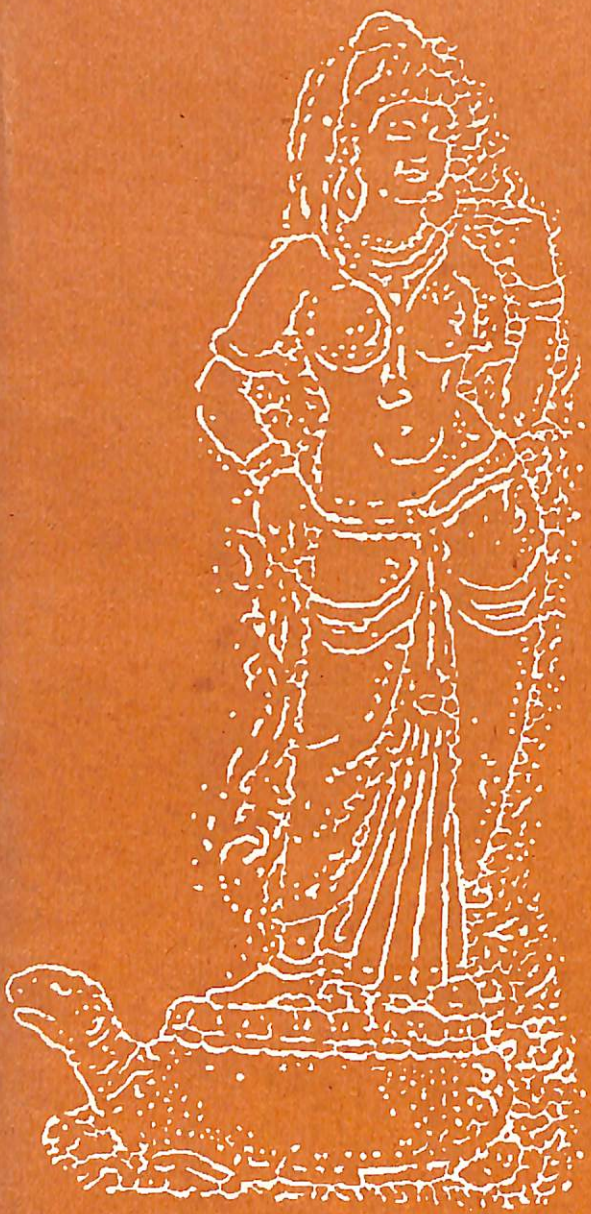

खड़ी बाज़ार में, मांगे सबसे खैर

रमेश शर्मा

जमना

खड़ी बाजार में
मांगे सबसे खैर

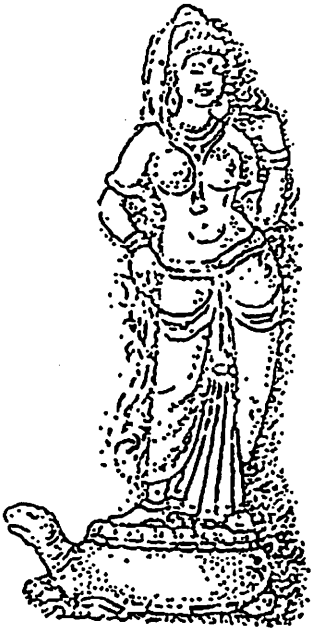

रमेश शर्मा

पीसफुल सोसाइटी
गोवा

जमना

खड़ी बाजार में, मांगे सबसे खैर

लेखकः रमेश शर्मा

प्रकाशकः पीसफुल सोसाइटी

इस सामग्री का प्रयोग आप कर सकते हैं स्रोत का उल्लेख करेगें
तो उत्साह बढ़ेगा, अच्छा लगेगा।

पुस्तक प्राप्तिः पीसफुल सोसाइटी एवं रमेश शर्मा, गांधी युवा बिरादरी
गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली-110002

सहयोगः स्वैच्छिक (स्वागत योग्य)। सीमित वितरण हेतु प्रकाशित

सज्जा एवं मुद्रणः सिस्टम्स विज़न systemsvision@gmail.com

पीसफुल सोसाइटी (शांतिमय समाज) गोवा गांधी विचार के आधार पर समाज के निर्माण का सपना लेकर कार्यरत है। शांति, अहिंसा, प्रेम, सौहार्द्र, समानता, बंधुता, सामाजिक न्याय, समता, महिला जागरूकता, बाल विकास, ग्रामोद्योग, ग्राम संगठन के माध्यम से यह सपना साकार करने के लिए स्वराज का समूह गोवा, महाराष्ट्र, केरल, तमिलनाडु, गुजरात, बिहार, झारखंड, उड़ीसा आदि प्रदेशों में सक्रिय एवं सतत कार्य कर रहा है।

भारतीय नदी घाटी मंच के माध्यम से देश भर में नदी पर कार्य करने वाले साथियों को जोड़ने, संपर्क एवं संवाद के लिए पीसफुल सोसाइटी कार्य कर रही है।

प्रकृति, प्राकृतिक साधन एवं मानव के संतुलित तालमेल के लिए पीसफुल सोसाइटी अपनी भूमिका अदा करने का अथक प्रयास कर रही है।

'पश्चिमी घाट बचाओ' में इसने अग्रणी भूमिका निभाई है। देश भर के साथियों से संपर्क, संवाद, बातचीत करने के लिए समय-समय पर विशेष आयोजन, कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते रहे हैं।

महात्मा गांधी के सपनों की ग्राम पंचायत की स्थापना की दृष्टि से आदर्श कानून का मसौदा तैयार करके ग्राम पंचायतों के सशक्तिकरण के लिए पीसफुल सोसायटी प्रयासरत है।

शांतिमय समाज
Peaceful Society

Ph: 0832-2392236-7 • Fax: 2392382
E-mail: peacefulsociety@gmail.com
Web: www.peacefulsociety.org • www.goapanchayats.org

नदी की बात कहां से शुरू करें? ये बात तो बूंद से समुद्र तक जाती है। उस बूंद में, बिन्दु में सिन्धु है और सिन्धु में भी बिन्दु है।

आज इस बिन्दु पर भी संकट है और सिन्धु, समुद्र पर भी संकट है।

देश में उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक प्रकृति ने कुछ करोड़ वर्षों की साधना से हमें चौदह बड़ी नदियों का एक सरल-तरल आशीर्वाद दिया है। फिर इन चौदह नदियों में कुछ सैकड़ों- हजार और छोटी-बड़ी नदियां जगह-जगह से आकर मिलती हैं और अपने जल से इन बड़ी नदियों को और अधिक समृद्ध बनाती रही हैं।

हजारों वर्षों से चली आ रही यह सुन्दर प्राकृतिक व्यवस्था पिछले दौर में कुछ टूटी है। कारण तो एक ही है: राज्य के अधिकार बढ़ जाना।

ये अधिकार इतने बढ़ गये हैं कि समाज के पास आज अपना कर्तव्य निभाने की भी कोई गुंजाइश नहीं बची है। परिणाम यह है कि एकाध नदी का अपवाद छोड़ दें तो बाकि सब बड़ी नदियां इस समय देश के बड़े शहरों की, बड़े उद्योगों की गंदगी और कचरा और मैला ढोने के काम में लगा दी गई हैं।

इसी के साथ एक और बात पर ध्यान दें। इन बड़ी नदियों को सम्पन्न बनाने वाली छोटी-छोटी नदियां सूख चली हैं। अब इनमें पूरे साल भर पानी नहीं बहता। बरसात में इन सब नदियों में बाढ़ आती है और फिर साल भर ये सूखी ही रहती हैं। इनमें रिस-रिस कर आने वाली एक-एक बूंद विकास की बढ़ती लालच ने खींच ली है।

कुल मिलाकर नदियों पर इससे बुरा समय और क्या आएगा।

अचरज ये है कि इसी बुरे समय में, इसी लूट-खसोट के दौर में कोई 35 वर्ष पहले नदियों को बचाने का कानून पास हो चुका है। कानून में नियंत्रण और निवारण जैसे दो शब्दों का उपयोग हुआ था। पर न प्रदूषण का नियंत्रण हुआ और न प्रदूषण का निवारण।

फिर ताजे दौर में सब नदियों की तरफ से ध्यान हटाकर दो-चार नदियों का, बड़ी नदियों का नाम ऊपर आ गया है और अब उनकी सफाई के लिए कुछ करोड़ों रुपयों की नई-नई योजनाएं सामने आ रही हैं।

ऐसे दौर में गांधी शांति प्रतिष्ठान के रमेश भाई ने यमुना के बारे में चारों तरफ बिखरी सामग्री, तथ्य, विचार और दर्शन को एक जगह समेट कर यह छोटी-सी पुस्तिका तैयार की है। यह बड़ा काम है। यदि ऐसे ही काम और हिस्सों पर, और नदियों पर होंगे तो कम से कम समाज को इतना तो पता चलेगा कि खराबी किस हद तक हो चुकी है और यदि अब इसे ठीक करना है तो कितनी कमर कसनी पड़ेगी।

बिन्दु और सिन्धु को बचाने के इस काम में हम सब को अपना-अपना कर्त्तव्य निभाना होगा। भले ही आज सारे अधिकार राज्य के, शासन के हाथ में सिमट गए हों- यदि हम अपना-अपना कर्त्तव्य निभाने लगें तो उन अधिकारों का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा।

हमें पूरा भरोसा है कि रमेश भाई ने कलम की यह जो छोटी-सी धारा बहायी है, वह धीरे-धीरे बढ़ती जाएगी।

अनुपम मिश्र
पर्यावरण कक्ष, गांधी शांति प्रतिष्ठान,
221 दीन दयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली-110002

हमारा समाज पानीदार समाज रहा है। सैकड़ों नदियां भारत को समृद्ध एवं हरा-भरा बनाती रही हैं। इन नदियों के किनारे, आसपास, इनके क्षेत्र में जीवन फलता-फूलता रहा है। मनुष्य का जीवन-क्रम नदियों के आसपास विकसित होते हुए आगे बढ़ा है। नदियों के आसपास वनस्पति, पशु-पक्षी, जीवन या कहें कि प्रकृति का निराला स्वरूप नजर आता है। नदियों का भारतीय संस्कृति, जीवन, साहित्य में महत्वपूर्ण एवं अहम स्थान रहा है, इसमें भी गंगा-यमुना का तो विशेष ही स्थान रहा है। नदियों को भारतीय समाज ने मां का दर्जा दिया हैं गंगा मैया, यमुना मैया, नर्मदा मैया आदि के नाम से नदियों को पुकारा, पूजा जाता रहा है। हर नदी को गंगा कहने का चलन भी समाज में रहा है। नदी को लोक माता के नाम से भी पुकारा जाता है। गंगा-यमुना यानी तारने वाली नदियां।

जल का महत्व

जल देवता- आपो देवता, तुम्हें परमात्मा के सामर्थ्य, शक्ति प्राप्त है। तुम धरती पाताल, आकाश तीनों लोकों को पवित्र, शुद्ध करते हो। तुम में शुद्ध, साफ, पवित्र, निर्मल, स्वच्छ करने की शक्ति है।

विश्व, जीव पंच महाभूतों के मेल से बना है इसमें जल की सबसे अहम् भूमिका है। यह पंच महाभूत जल, पृथ्वी, आकाश, अग्नि, वायु हैं। मानव का शरीर इन्हीं पांच तत्वों (भूतों) से मिलकर बना है। मानव शरीर में दो तिहाई हिस्सा जल का ही है। सृष्टि का दो तिहाई भाग भी जल ही है। सृष्टि की रचना भी पंच तत्वों (पंच महाभूतों) से हुई है। मानव सभ्यता में जल का विशेष महत्वपूर्ण, अहम् हिस्सा रहा है। प्रकृति का जल भंडार किसी न किसी रूप में मानव,

जीव, विश्व के लिए उपयोगी एवं कल्याणकारी है। प्रकृति में जल का इतना बड़ा हिस्सा होते हुए भी मानव उपयोग के लिए जल सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है।

वैज्ञानिक बताते हैं कि पृथ्वी पर उपलब्ध जल का 2.5% हिस्सा ही शुद्ध, मीठा सीधे उपयोग में लाने लायक है जबकि इसका भी दो-तिहाई हिस्सा बर्फ के रूप में जमा हुआ है। इस प्रकार जल का बहुत ही कम अंश मानव उपयोग में आता है। जल के बगैर जीव की कल्पना ही नहीं की जा सकती। जल है तो जीवन है। जल से ही जीवन का प्रारम्भ होता है। जल से ही सब प्रकार के प्राणी, जीव, पेड़े-पौधे, पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, जीव-जन्तु जन्म ले पाते हैं। हम कह सकते हैं कि जल के कारण ही प्रकृति का निर्माण शुरू हुआ। जगह-जगह समुद्र, सागर, झील, तालाब, झरने, नदियां बनी है। प्राकृतिक सौन्दर्य भी जल के कारण बढ़ा। जल का अपना इतिहास, जीवन, संस्कार रहा है। दुनिया में जल विभिन्न रूपों में विद्यमान है, कहीं नमकीन खारे पानी के रूप में समुद्र लहलहा रहे हैं, कहीं बर्फ के रूप में हिमखंड में

पूजा-पाठ श्रद्धा बची हुई है, आशा है लोग जागेंगे, खड़े होगें नदी को बचा लें...।

पानी सोया हुआ है, तो कहीं तालाब, झील के रूप में शांत, गंभीर बैठा है, कहीं कुंए-बावड़ी में छुपा है, बैठा है। धरती की शिराओं में भी पानी बह रहा है जिस प्रकार मनुष्य में रक्त बहता है, तो कहीं झरने-नदी के रूप में गतिमान है, बह रहा है, उछल-कूद कर रहा है, छलांगे लगा रहा है, खेल रहा है, आगे बढ़ रहा है, 'गति ही जीवन है' का संदेश दे रहा है। कैसी भी परिस्थिति हो हमें चलते रहना है, गति बनाए रखना है, गतिमान रहना है। चलना ही जीवन है।

प्रकृति ने जल के विभिन्न भंडार, स्रोत, साधन बनाए, दूसरी ओर मुनष्य ने भी जल के भंडार ढूंढे, बावड़ी, कुंए, तालाब, झीलें बनाई। जल संरक्षण, भंडारण के नये-नये साधन खड़े किए। जल का उपयोग, प्रयोग, दोहन, व्यापार, शोषण भी मानव ने प्रारम्भ किया और इसके नए-नए रास्ते खोजे, बनाए और आज भी इस काम में तेजी से लगा हुआ है और इसके लिए पारंपरिक ज्ञान को दूर किनारे कर वैज्ञानिक नाम पर, विज्ञान-तकनीकी का सहारा लेकर जनहित की आड़ में अपना उल्लू सीधा करने में भी लगा है। लाभ-लोभ के मोहवश हो जल एवं नदी के साथ व्यापक एवं सतत छेड़छाड़ जारी है। इसमें स्थानीय शक्तियों के साथ-साथ अब तो बहुराष्ट्रीय शक्तियां, व्यापारी, राजनेता, वैज्ञानिक, उद्योग, नेता, अधिकारी सभी अपने-अपने ढंग से जल के पीछे पड़े हैं। जल के प्यास को बुझाने, जीवन चलाने के बजाय व्यापार लाभ, लालच, दोहन, शोषण का धन्धा बनाया जा रहा है। एक ओर जलदान को सबसे ऊंचा रखा जाता था। जल की प्याऊ, कुंए, बावड़ी बनाई जाती थी। लोक यादगार के लिए, पुण्य के लिए, सेवा के लिए, दान के लिए, नाम के लिए, भक्तिभाव में जल के साधन खड़े करते थे जो सबके काम आते थे। आज दशा एवं दिशा दोनों ही बदल गई है। कहीं बैराज, बांध, गुफा आदि के माध्यम से जल को मारने के, जीवनहीन बनाने के लगातार प्रयास जारी हैं।

जल, नदियां खतरे में हैं। कहीं प्रदूषण, कचरा कूड़ा, मल-मूत्र, रसायन, कारखानों, उद्योगों का कचरा सब नदियों के हवाले किया जा रहा है। जबकि भारतीय समाज जल एवं नदी के बारे में बहुत ही सतर्क, सावधान, भक्तिभाव, श्रद्धा, आस्था, दृष्टि रखने वाला रहा है फिर भी कई नदियां लुप्त हुई है, गुप्त हुई हैं, मरी हैं, मरने जा रही हैं, उन्होंने अपना स्वरूप बदला है, रूप बदला है, रास्ता बदला है। कई नदी नाले में बदल गई है।

चाणक्य ने जल को पृथ्वी के तीन रत्नों में माना है:

"पृथिव्यां त्रीणिरत्नानि जल मन्नं सुभाषित" चाणक्य ने नीति शास्त्र के चौदहवें अध्याय के प्रथम सत्र में तीन वस्तुओं की महिमा बताई है। जो सच्चे रत्न हैं, उपयोगी, मूल्यवान एवं सार्थक है- जल, अन्न और मधुर वचन।

इसी प्रकार रहीम दास जी ने तो जल की महिमा का बखान करते हुए जन-जन के मुख पर यह वाणी चढ़ा दी—

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुस चून।।

पानी के महत्व को समझाते, दर्शाते हुए भगवान ने गीता के श्लोक में स्पष्ट किया है कि-

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

(गीता- 9 अध्याय, 26 श्लोक)

अर्पण करे जो फूल फल जल पत्र मुझको भक्ति से।
लेता प्रयत-चित भक्त की वह भेंट मैं अनुरक्ति से।।

(श्री हरि गीता)

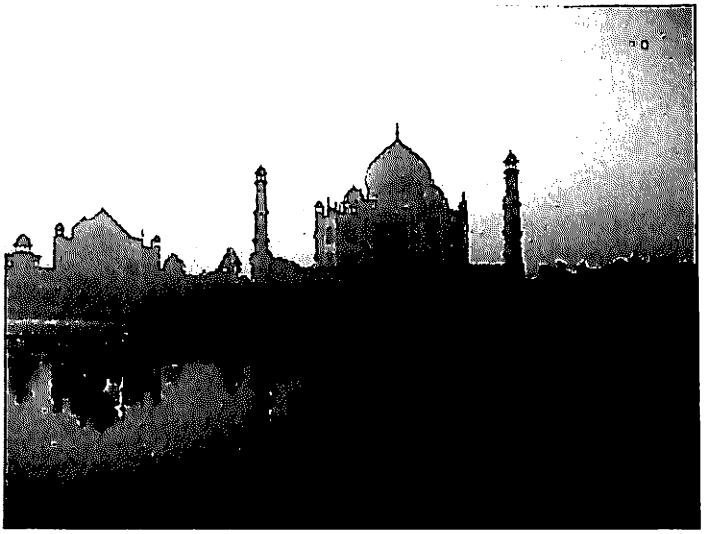

स्वच्छ, निर्मल जीवन देती नदी के किनारे ताज शान से बना था,
आज नदी के हालात पर रो रहा है।

यही श्लोक महाभारत में भीष्म पर्व, 31 अध्याय, 26 श्लोक, भागवत में 10 स्कन्ध द्वारिका लीला 81 अध्याय, चतुर्थ श्लोक और सुदामा चरित में भी आता है।

कोई भी भक्त एक पत्ता, फूल या जल (तोयं का अर्थ आंसू भी है) मुझे अर्पण करता है तो मैं उसे हाथ पसारकर प्राप्त कर लेता हूं। इस तरह जल का महत्व अनेक धर्मों में, विभिन्न ग्रन्थों में भी दर्शाया गया है। जल अपर्ण से भी परमात्मा, प्रभु बहुत खुश होते हैं। कोई भी व्यक्ति श्रद्धा, प्रेम, आस्था, भक्तिभाव, समर्पण भाव से मुझे जल अर्पित करता है तो मैं पूरे विश्वास, प्रेम, आग्रह से उसे स्वीकार कर प्रसन्न होता हूं। जल एवं आंसू से प्रभु प्रसन्न हो जाते है।

पूजा पाठ, स्नानादि के समय भी अधिकतर लोग नदियों के मंत्र बोलते थे। नदियों के प्रति अपनी भक्ति, श्रद्धा, सम्मान, आभार, कृतज्ञता व्यक्त करते थे। उस समय तक नदियां स्वच्छ, निर्मल, साफ, पवित्र, जल की वाहक रही। नदी का जल सीधे रूप में पीने के काम आता था। जीवन में नदी का महत्व कदम-कदम पर रहता था।

बिना जल के नदी की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। जल और नदी का अटूट रिश्ता है। जल और नदी के संबंध को समझकर ही हम जल और नदी का महत्व समझ सकते हैं। इसलिए हम यहां जल के बारे में भी चर्चा कर रहे हैं। नदी के लिए जल का होना परमावश्यक है।

गंगा बड़ी गोदावरी, तीर्थ बड़ा प्रयाग।
धारा बड़ी समुद्र की, पाप कटे हरिद्वार।।

गंगा सिन्धुश्च कावेरी यमुना च सरस्वती।
रेवा महानदी गोदा ब्रह्मपुत्रः पुनातु माम।।

गंगे। च यमुने। चैव गोदावरि। सरस्वति।
नर्मदे। सिंधु। कावेरि। जलेस्मिन् सन्निधिं कुरू।।

पानी से जीवन उत्पन्न हुआ, पानी से पला, पोसा और जीवन जिया। पानी में ही विसर्जित हुआ और पानी से मुक्ति के द्वार खुले। ऐसी हमारी अपनी पानी की परम्पराएं है जो हमारे से जीवन-पर्यन्त जुड़ी रहती है। इन्हें निभाने में हमारे समाज को आनंद, खुशी, उत्साह, समृद्धि, प्रकृत्तिमय, भावनात्मक,

वैचारिक दृष्टिकोण का मार्ग प्रशस्त होता है। भारत पानी परम्परा की जीवन शैली अपनाने वाला रहा है। वृहत संहिता में पानी के बारे में विस्तार से भारतीय ज्ञान- विज्ञान-परम्परा का विवरण मिलता है। समाज का पानी से विशेष रिश्ता रहा है। पानी-अन्नदान सर्वोत्तम, सर्वोच्च माना गया है, इसलिए स्मृति में कुएं, तालाब, बावड़ी, धर्मशाला, तिबारा, छतरी, प्याऊ बनवाते थे।

पानी रोकने की बात है। पानी संजोना, संवारना, सम्भालना, खुशहाल बनाना मनुष्य का धर्म है। जल पवित्र है। जल में पवित्र करने की क्षमता है। "बहता जल निर्मला" बहता जल अपने को शुद्ध-साफ कर लेता है, पापनाशक है। जल पवित्रता का प्रतीक है।

वर्षा सिंचित क्षेत्र को "देव मातृक" एवं नदी से सिंचित क्षेत्र को "नदी मातृक" के नाम से जाना जाता है। पानी के क्षेत्र की पहचान के लिए विभिन्न प्रतीक, चिन्ह, निशान बनाए जाते थे। तालाब, झील, नदी, कुआं, बावड़ी, नौला आदि पानी के लिए विशेष तरह के स्तम्भ एवं प्रतीक बनाए जाते थे जिससे पानी का क्षेत्र साफ-सुथरा, स्वच्छ, सुन्दर, पवित्र रह सके। इन चिन्हों, प्रतीकों को बनाने में भी कला का प्रयोग होता था। यह इतने कलात्मक एवं सुन्दर बनाए जाते थे कि समाज के सौन्दर्य बोध का ज्ञान होता है। पानी को साफ करने के लिए भी अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग वस्तुओं, माध्यमों का प्रयोग किया जाता था। मध्यप्रदेश में गदिया या चीला तथा राजस्थान में निर्मली, कुमुदुनि या चाक्षुष को काम में लाया जाता था। कहीं चूना, फिटकरी आदि का प्रयोग होता रहा है तो कहीं लौंग, जीरा, अजवाइन आदि से पानी को तैयार करते हैं। कहीं तांबे का बर्तन पानी को साफ करने के काम में आता है।

बचपन में एक कहानी सुनी थी जो जल के महत्व पर प्रकाश डालती है। पैगम्बर मौहम्द साहब ने एक जिज्ञासु से कहा कि जब ईश्वर ने धरती बनाई तो यह हिलती-कांपती थी, इसे रोकने के लिए मजबूत (शक्तिशाली) पहाड़ (पर्वत) बनाए। जिज्ञासु ने पूछा पर्वत से मजबूत क्या है? लोहा पर्वत से मजबूत है, वह पर्वत को काट देता है मगर लोहे से मजबूत अग्नि है वह लोहे को गला देती है। अग्नि से मजबूत जल है जो अग्नि को ठण्डा (बुझा) देता है। जल से मजबूत हवा है, जो उसे चलाती है। हवा से मजबूत दान है। जब दांए हाथ से दिया दान बाएं हाथ को भी नहीं मालुम हो तो उसे सच्चा, बड़ा दान माना जाएगा कि उसने हवा पर भी अधिकार पा लिया। इस पर जिज्ञासु ने

पूछा कि दान क्या है? प्रत्येक सद्गुण दान है। अपने भाई के सामने हंसमुख रहना दान है। साथियों से सदाचरण के लिए कहना दान है। अंधे व्यक्ति की सहायता करना दान है। मार्ग से कांटा हटाना दान है। प्यासे को पानी देना दान है, बड़ा दान है। पैगम्बर साहब ने यह सब कहा। जिज्ञासु ने फिर पूछा मेरी मां का देहांत हो गया मैं क्या दान करूं? पैगम्बर साहब ने कहा कि "जलदान" सबसे जरूरी, उपयोगी एवं अच्छा है।

जल एवं जीवन के रिश्ते को समझने के लिए विनोबा जी ने भी बताया है कि भोजन देने से पहले मुझसे मेरी मां पूछती थी विन्या तूने तुलसी को पानी दिया क्या? भोजन से पहले तुलसी को पानी देना। भोजन में गाय, कुत्ते, पक्षी के लिए कुछ निकालना, जीवन में इन सबका हिस्सा, हिस्सेदारी सुनिश्चित करता है। यह प्रक्रिया पर्यावरण सुरक्षा की ओर भी बढ़ाती है। यह भारतीय संस्कृति का अंग है जिसमें-

ईशावास्यम् इदम् सर्वम् यत् किं च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।।

उपरोक्त बात कही, अपनाई गई है- सृष्टि (प्रकृति) ईश्वरमय है। मनुष्य को त्याग वृत्ति से जीवन जीना है। दूसरे की भोगवृत्ति की ईर्ष्या या प्रतियोगिता नहीं करनी है। इस मंत्र से हमें यह त्रिविध संदेश मिलता है। यह भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत है। सृष्टि (प्रकृति) तथा मानव जीवन की तरफ देखने-समझने की यह स्वस्थ, अनोखी दृष्टि, दिशा है।

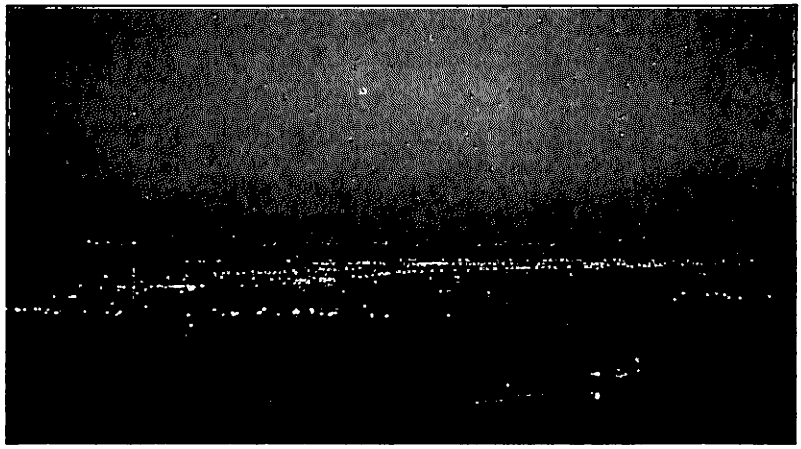

समाज से जीवंत रिश्ताः नदी उत्सवः दीप समर्पण।

भारत में नदी को "माता" (नदी माता) माना जाता रहा है। लड़कियों के नाम नदियों पर रखे जाने में खुशी, सम्मान माना जाता है। नदी माता की आराधना करते हुए कहा जाता है कि "हे देवी दूध जैसे पवित्र, पावन, मधुर, जीवन देने वाले जल को लाने वाली तू धेनू जैसी है, जिस तरह गाय बछड़े-बछड़ी को छोड़कर जंगल में नहीं रह सकती, वैसे तुम नदियां भी पर्वतों, उदगम स्थल पर ही नहीं रह सकती। तुम प्यासे बालकों को मिलने के लिए दौड़कर आती हो। नदी ईश्वर की बहती करूणा है और ईश्वर की करूणा बिना भेदभाव के सबको समान रूप से उपलब्ध है।" नदियों के लिए हमारे देश में अत्यंत प्रेमादर रहा है। पुरातन ग्रंथों में ऐसे आदर्श वाक्य आराम से मिले हैं कि "नदी का पानी बर्बाद करना पाप है।" "नदी में गंदगी डालना उसे गंदा करना पाप है।" "मन चंगा तो कठौती में गंगा।"

नदी को "लोक माता" भी कहते हैं। तुम माता हो, प्रेमल माता सर्वोच्च स्तनपान करवाती है, उसी तरह हे देवी तुम हमें "शिवतम रस" दो। शिवतम यानि अत्यंत शिव-कल्याणकारी, परोपकारी। नदियों के जल को शिवतम रस, ईश्वर का रस कहा है- इतनी बड़ी संज्ञा नदियों के जल को दी गई है। स्वच्छ पानी को "प्रसन्न जलम्" कहते है। संस्कृत में प्रसन्न का मतलब निर्मल, शुद्ध, साफ है। जलाशयों की पवित्रता, शुद्धता, निर्मलता के लिए अनेक परम्पराएं, नियम बनाए गए थे। इनमें से आज एक का भी अमल नहीं हो रहा है। प्रकृति का पंच महाभूतों से गहरा रिश्ता है, आगम में भी पंचभूतों का गहरा रिश्ता है सूर्य (अग्नि), समुद्र (जल) से भांप बनाता है, वायु (हवा) उसे ऊपर नभ (आकाश) में मेघ के रूप में ले जाती है और फिर मेघ (बादल) वर्षा की बौछार से जमीन (भूमि) पर आशीर्वाद के रूप में जल की बूंदे प्रदान करते हैं। वर्षा सृष्टि, परमात्मा का आशीर्वाद है। सृष्टि से यह गहरा नाता है। नदी इसका अहम् हिस्सा है।

भारतीय समाज में कहा जाता है कि जो जहां से आया है वहीं वापिस जाता है, जाना है। समुद्र से बादल बनकर उठते हैं और फिर समुद्र में ही आकर जल मिल जाता है। तुकड़ोजी महाराज का यह गीत भी इसे स्पष्ट कर रहा है:

हर देश में तू हर भेष में तू, तेरे नाम अनेक तू एक ही है।
तेरी रंगभूमि यह विश्वभरा, सब खेल में, मेल में तू ही तो है।।

सागर से उठा बादल बनकर, बादल से फूटा जल होकर के।
फिर नहर बना, नदियां गहरी, तेरे भिन्न प्रकार, तू एक ही है।।

हमें जो दिख रहा है, जिसका अस्तित्व है जो आस-पड़ोस या दूर में है, जो दिख नहीं रहा उसका अहसास हो रहा है या अहसास भी नहीं हो रहा, तब भी वह है। उन सबको जो दिख रहा है और दिखता नहीं, जिसका अहसास है और नहीं है, जो कुछ भी है वह प्रकृति का हिस्सा है। वह चल रही है, दौड़ रही है फिर भी वह स्थिर है। वह स्थिर है फिर भी चल रही है, दौड़ रही है, चलायमान है। यह प्रकृति की अद्‌भूत शक्ति एवं निराली छटा है।

प्रकृति शक्तिशाली है तथा अपने ही नियम से संचालित है जिसके सहारे प्राणी, जीवन, मानव का जीवन चल रहा है। प्रकृति का अपना ही संचालन है तथा वह समय-काल-परिस्थिति-स्थान के अनुसार स्वयं को संचालित करती रहती है।

रचना और विनाश, जीवन और मौत, लाभ और हानि, यश और अपयश, सुख और दुःख इसी पद्धति, प्रणाली, नियम के हिस्से हैं। गर्मी, वर्षा, शिशिर

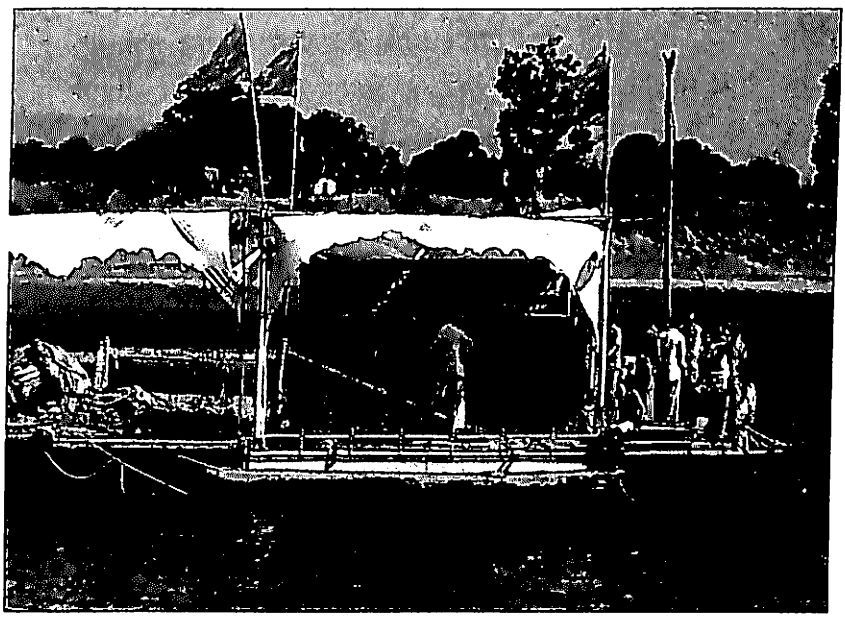

नदी के बीच धारा में बना उत्सव मंच।

(शरद), सर्दी, पतझड़, हेमंत (बसंत) आदि ऋतु इसी प्रक्रिया के अंश हैं। नदियों का बनना, निकलना (उदभव), बहना, दिशा, मिलन (संगम) सब प्रकृति की लीला है, उसकी रचना है। जब मनुष्य इससे मनमाने ढंग से, लोभ, लालच के लिए छेड़छाड़ करता है तो विनाश की राह में तेजी आती है। यह सब मनुष्य हित, जनहित, विकास, सभ्यता, विज्ञान, ज्ञान, आधुनिकता आदि के नाम पर करता है और अपने को सबसे बड़ा मानता है। अपने ही पांव में कुल्हाड़ी मारकर, अपनी विरासत के साथ खिलवाड़ कर आने वाली पीढ़ियों को तथा प्रकृति को खतरे में डालकर विनाश के द्वार खोल रहा है। इसके बजाय हमें प्रकृति के साथ सहयोग करते हुए प्राकृतिक दृष्टि, प्रकृति प्रेमी बनकर सतत, टिकाऊ, सहज-सरल, अपने काबू में रहने वाले कार्य कर प्रकृति से मिलकर विकास की राह पकड़नी है।

जल संरक्षण, नदी सुरक्षा हमारी आवश्यकता, हमारा कर्तव्य, हमारा धर्म, हमारी परम्परा, हमारी मान्यता, हमारी सुरक्षा, हमारा जीवन चक्र है। इसके लिए हमें त्याग भावना से उपयोग करना, सीखना होगा। अंधा उपयोग, भोग की प्रवृति हमें विनाश के कगार पर ले जा रही है। अब भी देर हो गई है फिर भी आज भी चेत जाएं तो कोई राह मिल सकती है। "जब से जगो रे भैया तब से सबेरा जानो" हमें जागरूक बनकर खुद भी चेतना है और लोगों को भी जागरूक बनाने, चेताने के लिए प्रयास करने है। "तेन त्येक्तन भुंजीथा" त्याग करके, त्याग भावना से उपयोग करने का सिद्धान्त व्यक्ति और समाज से दूर हो रहा है जो खतरनाक एवं आत्मघाती है इसलिए बचना है तो मात्र उपभोग, उपभोक्तावाद से दूर जहां त्याग, सेवा, परमार्थ, संयम, सादगी, सरलता, सहजता, समझदारी को मान्यता है तथा यह जीवन के अंग है, उस जीवन पद्धति की ओर लौटना होगा। इसी में सबका कल्याण, हित समाया है।

प्रकृति की समस्त रचनाओं में मानव एक अनुपम, विशेष कृति है। प्रकृति ने मानव को अद्भुत बौद्धिक क्षमता एवं शक्ति प्रदान की है। वह दुनिया, प्रकृति आदि को अपने ढंग से देखने, जानने, समझने, सोचने, उपयोग करने, भोगने, मोड़ने, जोड़ने, तोड़ने, अपनाने, बनाने, मिटाने की एक सीमित क्षमता रखते हुए ज्ञान-विज्ञान, आध्यात्म के तत्व को भी जानने, समझने, अपनाने, खोजने, पाने की शक्ति रखता है। मानव अपना किसी भी दिशा में विकास कर सकता है। वह देव एवं असुर दोनों ही राहों पर चलने की क्षमता रखता

है। वह प्रभु भक्त बनकर प्रभुमय बन सकता है और प्रभु से टक्कर लेकर दुश्मनी करके उसके साथ युद्ध छेड़ने की ताकत भी रखता है। एक ओर मनुष्य परमपिता परमात्मा, प्रकृति का दोस्त, मित्र, भक्त बनकर उसमें रम जाने की चाह रखता है और दूसरी ओर परमात्मा प्रकृति से टकराकर उसको चूर-चूर करने, उसे विजयी बनाने, उस पर राज करने, उसका भोग करने की, उसे गुलाम बनाने की चाह (इच्छा) मन में पालता है और यह द्वन्द्व लम्बे समय से हजारों वर्षों से चला आ रहा है, कभी कोई शक्ति इसमें आगे बढ़ती नज़र आती है, कभी कोई शक्ति। बार-बार इस तरह का माहौल, इतिहास, परम्परा कहानी-किस्सों, बातचीत, जानकारी में नज़र आता रहा है।

हमारा ज्ञान बताता है कि जब-जब मनुष्य मात्र लाभ, लोभ, अंधा भोग, दुरुपयोग में पड़ता है तो वह ज्ञानी होते हुए भी, भक्त होते हुए भी मनुष्य जाति में सम्मान से नहीं देखा जाता है। रावण, कंस, दुर्योधन आदि ऐसे अनेक उदाहरण हमें देखने, सुनने, पढ़ने, जानने को मिलते हैं। जब-जब जिसने भी प्रकृति को वश में करने का प्रयास किया वह उसमें पूरी तरह सफल नहीं हुआ बल्कि उसका पूरा नाश हो गया। वह और उसका कुल पूरी तरह नष्ट हुआ। उसको अपयश, अपमान, हार का मुख देखना पड़ा अंत में सत्य की ही विजय हुई।

मानव का विकास देखने, समझने, जानने की एक अद्‌भुत घटना है। मानव विकास से हम अनेक सबक ले सकते हैं, अपना शिक्षण कर सकते हैं। कैसे मनुष्य एक से अनेक, समूह, समाज, कबीले, गांव, शहर तक पहुंचा। यह श्रृंखला बहुत लम्बी एवं वर्षों तक चलकर यहां तक पहुंची है। मनुष्य ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे, व्यवस्थाएं बनाई, तोड़ी, सुधारी, चलाई और वह चलता ही रहा, अच्छाई-बुराई को अपनाते-छोड़ते, सीखते-सीखाते यह क्रम आज भी जारी है। न पुराना सब कुछ अच्छा था, न नया सब कुछ बुरा है। अच्छाई-बुराई की उपस्थिति हरदम रही है मगर जब इसका संतुलन बिगड़ जाता है तो मानव जाति, जीव-जन्तु, वनस्पति, प्रकृति खतरे में पड़ जाती है। संतुलन बिगड़ता है तो प्रकृति चेतावनी देती है, मनुष्य को सम्भलने के अवसर प्रदान करती है। उसे बार-बार विभिन्न प्रकार के अवसर देती है तब भी मानव न सम्भले तो अपना रूप, अधिकार का प्रयोग कर कुछ ऐसा खेल खिलाती है कि तबाही ही तबाही देखने को मिलती है मगर मनुष्य भी अद्‌भूत प्राणी है वह अपनी

दशा अपने ढंग से तय करता चलता है। वह जिस दिशा में चल जाए उसी दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करता है।

जल स्रोतों के आसपास ही मनुष्य ने अपना बसेरा, आसरा ढूंढा। इसमें पोखर, तालाब, झील, नदी का स्थान अहम है। पानी के आसपास ही छोटे-बड़े नगर बसे हैं। धीरे-धीरे नगरों ने महानगरों का रूप लिया और पानी की व्यवस्था, संरक्षण, भंडारण के रूप भी तेजी से बदले। पानी सैकड़ों कि.मी. दूर से नहर, नाले, पाईप द्वारा लाया जाने लगा। पानी को बांधना, अपनी मर्जी से चलाना, मनुष्य ने सीखा और पानी की अपनी चाल बंद कर उसे अपनी इच्छानुसार, अपनी चाह के अनुकूल उसकी राह बनानी शुरू कर दी। अब पानी पर अधिकार उसके पास, किनारे, आसपास रहने वालों का नहीं बल्कि पैसा, सत्ता, ताकत वालों का बनने लगा। पानी सबका न होकर समूह, व्यक्ति, सत्ता, प्रशासन, उद्योग, कम्पनी के मालिकाना अधिकार में आने लगा।

प्रकृति का यह अनमोल रत्न, सार्वजनिक, साझा, सहज, सरल, सबके लिए उपलब्ध होने के बजाय लाभ, लोभ, व्यापार का, धंधे का माध्यम बन गया पानी बिक्री की वस्तु बन गया तथा प्याऊ, मटके, टंकी, कुएं, बावड़ी, नाले, नोले, झरने, नदी स्रोत से हटकर बोतल में बंद होने लगा। बोतल का पानी प्रतिष्ठा, सम्मान, गौरव, सुरक्षा का प्रतीक बनने लगा। एक बोतल की कीमत (दाम) 10 रूपये से शुरू होकर सैकड़ों रूपये तक है। हर छोटी-बड़ी कम्पनी का अपना नाम, अपनी छाप और अपना दाम बनने लगा। इसके दाम (कीमत) पर व्यक्ति, समाज, सत्ता, प्रशासन का कोई दबाव, अधिकार नहीं रहा। जिस भाव चाहे उस भाव बेचो। किसान के उत्पादन, खेती के उत्पादन पर लेवी लगाकर कानूनी रोक है मगर जीवन आवश्यक वस्तु, तत्व पानी पर सरकार, कानून, सत्ता, प्रशासन की कोई रोक-टोक नहीं। आप कितना भी मुनाफा (लाभ) कमाओ, खुली जेब काटो, खुली लूट करो, प्रकृति का खुला दोहन, शोषण करो इस पर कोई रोक नहीं, आश्चर्यजनक है। अन्न से भी जरूरी वस्तु, तत्व जल (पानी) है मगर इस पर अन्धाधुन्ध अधिकार जमाया जा रहा है, जो बहुत ही खतरनाक एवं भयंकर है।

जल समृद्धि, सुख, सम्मान, संतोष का प्रतीक रहा है। लोग एवं शासक मिलकर एवं व्यक्तिगत स्तर पर प्याऊ, तालाब, कुएं, बावड़ी का निर्माण करवाकर पुण्य, सुख-संतोष, सम्मान प्राप्त करते रहे हैं। धर्मबोध से पुण्य कमाने, मोक्ष प्राप्ति के लिए, सेवा के लिए, दान के लिए भी इनका निर्माण किया जाता रहा

है। पानी वाला व्यक्ति एवं समाज खुशहाल माना जाता था। पानी से खेती, पशुधन, वनस्पति, बाग-बगीचे, प्लेज, बागवानी, रोजगार, स्वास्थ्य, प्रशिक्षण, यातायात समृद्ध होता था। हमारे उत्सव, मेले, प्रदर्शनी, खेल-कूद, अखाड़े, तैराक संघ आदि सभी पानी के आसपास होते थे। पानी के आसपास ही जीवन का आनंद, सुख, विस्तार, फैलाव रहा है। पानी ही केन्द्र बिन्दु रहा है। पानी के आसपास ही आश्रम, शिक्षा केन्द्र, तपस्या स्थल आदि का निर्माण-विकास हुआ। पानी यानी जीवन, जीवन का विकास, जीवन की गति, विस्तार, जीवन का आनंद, जीवन का सुख-संतोष। पानी के प्रति श्रद्धा, आस्था, समृद्धि, चेतना, प्रेम, सम्मान का भाव जब तक बना रहा व्यक्ति, समाज को पानी स्वस्थ, स्वच्छ, शुद्ध, निर्मला, सहज उपलब्ध रहा।

पानी का काम करने वाले ऋषियों, मुनियों, ज्ञानियों, शासकों, समाज सेवियों, लोगों को समाज ने सदा याद रखा है। उनके प्रति सम्मान, गौरव का भाव रखा है। उन्हें अपनी यादगार, साहित्य, लोकगीत, संगीत, कला आदि में संजोकर रखा है। उनके प्रति कृतज्ञता भाव अनेक रूपों में व्यक्त किया है। उनकी स्मृति में मेले, उत्सव, त्यौहारों को प्रारम्भ किया। समाज में एक प्रक्रिया, पद्धति बनाई जिससे पानी से हमारा संबंध, संपर्क, श्रद्धा, प्रेम, आस्था, विश्वास, महत्व का

हौज़-ए- शम्सीः यमुना के किनारे बसी दिल्ली में ऐसे सैकड़ों तलाब थे।

रिश्ता बना रहे । हम पानी के प्रति अपना लगाव, संबंध बनाकर रख सकें। जिन्होंने पानी के लिए काम किया उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सकें, उनको याद कर सकें, उनसे प्रेरणा प्राप्त कर काम को आगे बढ़ा सकें। संकल्प के साथ अपनी राह बना सके। इसके लिए ही परम्पराएं बनाई गई। दुर्भाग्य हमारा कि हम इन्हें जीवंत नहीं रख सके बल्कि कर्मकाण्ड और रश्म पूरा करने तक ही सीमित रहने लगे जिसका नतीजा, परिणाम हमारे सामने है।

जब हमने अपनी परम्परा, नियमों में बदलाव लाना शुरू किया तो हमारी दशा और दिशा दोनों ही भटक गई। पानी के प्रति वेदों, पुराणों, उपनिषदों के साथ मनुस्मृति, विदुर नीति, चाणक्य नीति के साथ-साथ सभी धर्मों में, धर्म के ग्रन्थों आदि में भी विस्तार से चर्चा की गई है, पानी के महत्व को दर्शाया है। पानी की सुरक्षा, संरक्षण के लिए तथा पानी की बर्बादी रोकने के लिए अनेक नियम, परम्परा, नीति वाक्य बनाए गए। पानी के प्रति सजगता, प्रतिबद्धता, निष्ठा के कारण ही आज भी पानी के स्रोत हमें देखने को मिल रहे है। पानी के प्रति समाज स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर रहा। आर्थिक उदारता एवं वर्तमान वैश्वीकरण ने तेजी से पानी के रिश्ते ही बदल दिए। हमारा जल संरक्षण, सुरक्षा, प्रबंधन सबको ठेंगा दिखाते हुए अपनी नई नीति, व्यवस्था, प्रबंधन, अधिकार खड़ा कर दिया और हमारा पानी हमारे हाथ से खिसक गया।

गांधीजी ने स्पष्ट कहा है: प्रकृति सबकी आवश्यकताएं तो पूरी कर सकती है मगर लालच किसी एक का भी पूरा करना कठिन है।

भारतीय जीवन पद्धति में जन्म से मृत्यु तक पानी की परम्परा जुड़ी हुई है, शामिल है। जल ऊर्जा का स्रोत है। ऊर्जा से ही जीवन गतिमान है, सृष्टि चल रही है। जल से ही पोषक तत्व मिलते हैं। अन्न ब्रह्म माना गया है और बिना जल के अन्न का उत्पादन नहीं हो सकता है। जल में शुद्ध करने की शक्ति है इसलिए जन्म से मृत्यु तक रोजाना के जीवन में जल की विभिन्न रूपों में जरूरत है। अनेक प्रकार के विधि-विधानों में भी जल का महत्वपूर्ण अहम् स्थान है। हमारे तीर्थस्थल अधिकतर वही हैं जहां जल उपलब्ध है। तीर्थ स्थल पर जल का होना आवश्यक है। जल में औषधि तत्व भी है। जल को महाऔषधि माना है। जल से अनेक व्याधियों का उपचार भी किया जाता है। व्यायाम के लिए तैरना महत्वपूर्ण है। मनोरंजन एवं रोजगार के लिए नौकायान द्वारा सैर करना, नदी घूमने-ताजा हवा खाने, स्नान करने आदि का

उत्तम स्थान रहा है। मछली पालन, जल की फसलें, खेती, बागवानी, प्लेज, फूलों की क्यारी आदि से भी रोजगार उपलब्ध होता है। यातायात के साधन के रूप में जल का प्रयोग पहले से होता है। श्मशान एवं अस्थि विसर्जन भी जल के पास किनारे किया जाता है। अस्थि विसर्जन के लिए किसी तीर्थ में सरोवर, तालाब, नदी, झरना, झील, समुद्र आदि का प्रयोग किया जाता है। तर्पण संस्कार के लिए भी जल की जरूरत है। पूर्वजों, पितरों की शांति के लिए तर्पण किया जाता है।

प्रकृति प्रार्थना में नदी का वर्णन इस प्रकार किया गया है:

ऊंचे पर्वतराज महान, तू है अपार महिमावान।
तेरे सुंदर वक्षस्थल से, सरिता बहती कल-कल स्वर से।
तेरे घने-घने जंगल से, जन होवें सब संपदवान।।

सृष्टि तो सारी चंचल है, तू किन्तु उन्नत अविचल है।
हम भी होवें स्थिर मतिवान, ऐसा दे दे तू वरदान।।

यह सरिता की धारा सुंदर, शुभ भाव जगाती मम अंतर।
ऊपर हिमगिरि से आती है, नीचे कलकल बह जाती है।।
नित नीचे वाले को ही स्मर, निज जीवन देती भर-भर कर।

इत चट्टानों को चली चीर, उत घनवन छाये उभयतीर।।
संदेश पराक्रम का उर धर, अविरत गाती वह स्वर मरमर।

हो वर्षा का भीषण गर्जन, हेमंत शिशिर का या नर्तन।
जीवन भी बहता झर-झर, ले भाव भयंकर ओ सुंदर।।

एक बनें हम नेक बनें हम, करें पराक्रम सदा महान।
सत्य वदें हम, झूठ तजें हम, ईश्वर की हम सब संतान।।
उठके खड़े हम, आगे बढ़ें हम, सबकी सेवा करें समान।
रोग मिटे, अज्ञान कटे सब, सृष्टि सकल हो सम्पदवान।।

गंगा-जमनी संस्कृति

गंगा-जमनी (यमुना) संस्कृति की चर्चा भी व्यापक तौर पर होती रही है। साझा, मिली-जुली संस्कृति, सहनशीलता, एकता की बात कहनी हो तो गंगा-जमनी (यमुना) संस्कृति की बात सामने आती है। गंगा-यमुना के मध्य के क्षेत्र को

दोआब (दो आबा) के नाम से भी जाना-पहचाना जाता है। दोआब (दो आबा) यानी दो पानी के मध्य का हिस्सा। यह क्षेत्र आमतौर पर हर दृष्टि से बहुत ही समृद्धशाली, विकसित, हरा-भरा, जीवनदायक रहा है। इस क्षेत्र की अपनी विशेष पहचान रही है। भारत नदियों का देश रहा है। सदानीरा, सतत बहने वाली नदियां देश के विभिन्न भागों को जीवन प्रदान करती रही है। गंगा नदी का क्षेत्र ही सारे भारत में सबसे विशाल है।

उत्तर में गंगा, यमुना और इनकी सहायक नदियां एवं ब्रह्मपुत्र बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। सिन्ध तथा इसकी सहायक नदियां अरब सागर में जा मिलती हैं। दक्षिण पठार के उत्तर की ओर बहने वाली नदियां चम्बल, बेतवा, केन, सोन आदि गंगा-यमुना के क्षेत्र में आती हैं। अरावली पर्वतमाला गुजरात से लेकर उत्तर हिमालय की तलहटी तक फैली है। इसके पूर्व में चम्बल घाटी है जो अपनी उप नदियों के साथ मालवा के पठार को विभाजित करती है। अरावली के पश्चिम ढलान में लूणी और पूर्वी ढलान में बनास नदी बहती है। मध्य भारत के विध्यांचल का ढलान गंगा-यमुना घाटी की ओर बना हुआ है। दूसरा बंगाल की ओर दक्षिण-पूर्व की ओर की ढलाने हैं। इसलिए सोन पश्चिम की ओर बहकर गंगा में जा मिलती है और महानदी उड़ीसा में जाकर समुद्र में गिरती है। इन नदियों का अध्ययन गहराई से गहन चिंतन के साथ किया जाए तो रुचिकर एवं अद्‌भुत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

गंगा और यमुना दो बहनें हैं, दोनों ही हिमालय पर्वत से निकलती हैं। इन्हें जुड़वां बहनें माना जाता है। फिर भी रंगरूप, आकार-प्रकार के साथ-साथ दोनों के स्वभाव में भी भिन्नता है। गंगा आवेश, जोश, उत्साह एवं तेजी से बहती है जबकि यमुना शांत एवं सहनशील है। कहा जाता है कि क्रांति, बदलाव, परिवर्तन की लहर अधिकतर गंगा किनारे से शुरू होती है और यमुना किनारे आते-आते शांत हो जाती है। यमुना का स्वभाव शांत है क्योंकि इसका वाहन कूर्म (कछुआ) है जो शांत बुद्धिवाला, सम्पूर्ण आशावादी, सहनशील स्वभाव, वृत्ति का होता है। कछुआ समन्वय साधक भी है। कूर्मावतार ने प्रवृत्ति और निवृत्ति का समन्वय, संतुलन करवाया। प्रवृत्ति-निवृत्ति का संतुलन ही जीवन, संस्कृति को आगे बढ़ता है। यमुना का स्वभाव भी इसी अनुरूप बना है। दोनों इलाहाबाद में प्रयागराज में जाकर मिल जाती है जहां दोनों का संगम होता है। इसे त्रिवेणी भी कहा जाता है क्योंकि सरस्वती गुप्त रूप में यहां मिलती है। यह पवित्र स्थल माना जाता है।

यहां कुंभ एवं माघ मेला लगता है जिनकी अपनी रौनक एवं भव्यता रहती है। कुंभ एवं माघ मेले की परम्परा लम्बे समय से चली आ रही है। कुंभ की अपनी अनेक विशेषताएं है। जल के महत्व को समझने-जानने वाला समाज ही कुंभ लगा सकता है। सामाजिक, सांस्कृतिक रूप में स्वस्थ चिंतन का समाज ही कुंभ जैसी व्यवस्था बना, चला सकता है। जिसमें इतने बड़े समाज की भागीदारी होती हो बिना बुलाए इतनी बड़ी संख्या में अपने खर्चे से स्वयं स्फूर्त्त ढंग से लोग उत्साह, भक्ति, प्रेम से भाग लेकर अपने को धन्य, भाग्यवान, भाग्यशाली मानते है और दुबारा यह सौभाग्य, मौका मिले इसका इंतजार करते है। ऐसे लाखों लोग इसमें भाग लेते हैं, पूजा-पाठ, स्नान, ध्यान करते हैं क्योंकि कुंभ का अपना महत्व है। अर्धकुंभ छः वर्ष में, पूर्णकुंभ बारह वर्ष तथा महाकुंभ 144 वर्ष में आता है। कुंभ हरिद्वार, प्रयागराज इलाहाबाद, उज्जैन, नासिक में भरते हैं।

दिल्ली में यमुनाः ऐसे में भी लोग धार्मिक, सामाजिक कार्य सम्पन्न कर रहे हैं।

यमुना

यमुना को यमी नाम से जाना जाता है। यमुना, जमुना, जुमना, जमना आदि नाम से भी इसे पुकारते हैं। कालिंद पर्वत से निकलने के कारण इसको कालिंदी भी कहा जाता है। इसका पानी नीला, श्यामल है जो काला दिखता है। इसलिए भी इसे कालिंदी कहते हैं। यमुना के पिता तेजस्वी सूर्य भगवान तथा माता विश्वकर्मा की पुत्री 'संजना' है। यमुना सूर्यवंशी है तथा इसका भाई

यम मौत का देवता है। यमुना और यम दोनों भाई-बहनों में अगाध, प्रगाढ़ प्रेम रहा है। इसका एक कारण यह भी माना जाता है कि माता संजना अपने पति तेजस्वी सूर्य का तेज बर्दाश्त नहीं कर पा सकी इसलिए अपनी छाया पैदा करके स्वयं दूर चली गई। ऐसे में दोनों भाई-बहनों ने एक दूसरे का खूब ख्याल रखा तथा परस्पर इनका प्रेम और प्रगाढ़ हो गया। यमुना बहन और यम भाई के परस्पर प्रगाढ़ प्रेम की याद में ही "भैया दूज" का पर्व, त्यौहार, उत्सव मनाया जाता है। इसे "यम द्वितीया" के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि यमुना ने यम को इस दिन अपने यहां भोजन पर बुलाया था। यह पर्व आज भी भाई-बहन के प्रेम के रूप में मनाया जाता है, जो कि भाई-बहन के प्रेम को दर्शाता है। भाई-बहन सुखी रहे, दीर्घायु हो, इसी कामना से यमुना देवी एवं यम देवता की विशेष पूजा इस दिन की जाती है। मान्यता है कि जो श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, निष्ठा, समर्पण भाव से यमुना में स्नान करेगा, यमुना की पूजा-पाठ-ध्यान करेगा, उसको यम का भय नहीं सतायेगा, उसका जीवन स्वस्थ एवं सुखी होगा।

यमुना की बात हो और उसमें कृष्ण की चर्चा न हो तो बात अधूरी ही रह जाती है। यहां हम कृष्ण का स्मरण मात्र ही करेगें, विस्तार से चर्चा नहीं। मथुरा, वृंदावन, बरसाने की धरती का यमुना और कृष्ण के साथ बहुत ही गहरा रिश्ता रहा है। यमुना नदी घाटी में अनेक तीर्थ स्थल, महत्वपूर्ण स्थान है मगर हम उनकी चर्चा यहां नहीं कर सकें है। दुनिया के सात अजूबों में शामिल ताजमहल, तुलसीदास, सूरदास के जन्म एवं कर्म स्थल आदि।

कृष्ण का तो यमुना से जन्म से ही गहरा रिश्ता, संबंध रहा है। जन्म लेते ही कृष्ण को वासुदेव टोकरी में लेकर मथुरा से वृंदावन जा रहे थे तो यमुना मैया मध्य में पड़ी। वासुदेव ने सोचा कि इतनी गहरी नदी कैसे पार करूंगा। उन्होंने सोचा, प्रार्थना करनी शुरू की तथा यमुना मैया का ध्यान करते हुए नदी में प्रवेश किया, यमुना का जल स्तर बढ़ने लगा, वासुदेव जी मन में घबराए, उन्हें अपने से ज्यादा बच्चे कृष्ण की चिंता थी। यमुना कृष्ण के चरण छूने के लिए ऊपर उठ रही थी। पिताजी की घबराहट की हालात देखकर कृष्ण ने टोकरी से अपना पांव लटकाया और यमुना ने कृष्ण के चरण छूकर शांत, प्रसन्न होकर वासुदेव को रास्ता प्रदान किया। वासुदेव जी ने कृष्ण को सुरक्षित वृंदावन में नंद-यशोदा के घर पहुंचा दिया।

कृष्ण का बचपन यमुना के किनारे ही गुजरा। कृष्ण की लीलाएं यमुना के आसपास ही हुईं। यमुना और कृष्ण लीला के अनेक किस्से हैं। यहां यमुना के महत्व के लिए ही इसकी झलक या चर्चा की है, इसकी विस्तार से व्याख्या करने का यह स्थान नहीं है। कृष्ण एवं यमुना के अनेक रोचक, प्रेरणा देने वाले किस्से भी है। हम इनका अध्ययन करेंगे तो कृष्ण-यमुना का रिश्ता, प्रेम, लगाव हमें स्पष्ट होगा। यमुना में कृष्ण का खेलना, उसके किनारे कुंजों में बंसी बजाना, सफाई करना, कदम्ब के पेड़ पर चढ़ना, छुपना, स्नान करना, उसके आस-पास गाय चराना, मक्खन लूटना, ग्वाल बालों एवं गोपियों के साथ रास रचाना, नाचना, खेलना, लीलाएं करना आदि उनके जीवन की यमुना के साथ अद्‌भूत घटनाएं हैं।

यमुनोत्री में पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ यमुना।

अनेक भक्त, ऋषि, कवि, लेखकों का यमुना के साथ गहरा रिश्ता, संबंध रहा है, उन सबको याद करते हुए यमुना या किसी भी नदी के संरक्षण, बचाव, सुरक्षा, सेवा कार्य में जो भी व्यक्ति, संगठन, समूह कार्य कर रहे है उनके प्रति हम अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए आशा करते है कि नदियां साफ, स्वच्छ, निर्मल पानी के साथ पुनः अपनी रंगत में आएगी।

यमुनोत्री से पहले यमुना हिमखंडों में रहती है। यमुना हिम नदी है जो हिम खंडों के पिघलने से बनती है। यमुना यमुनोत्री बंदर पुंछ के पास से (30° 58' N, 78° 27' E) हिमालय के लगभग 6320 मीटर ऊंचाई से निकलती है। यमुना

की धाराओं को वसुधारा, सप्तधारा, सहस्रधारा, गुप्तधारा, गिरिजा नाम से भी जाना जाता है। कुछ दूरी आने पर गरूड़ गंगा, ऋषि गंगा, भैरवघाटी, खरसाली में तथा हनुमान चट्टी में हनुमान-गंगा यमुना में मिलती है। बदियर, कमलाद, बदरी, अस्लौर नदी को समाकर यमुना आगे बढ़ती रहती है। शिवालिक पहाड़ियों के मध्य दून घाटी होती हुई टोंस जिसे सुप्पीन भी कहते है, के साथ असान, आशानदी, गिरी, सिरमौर आदि नदियां यमुना में मिलती हैं। सहारनपुर जिले के फैजाबाद ग्राम के पास यमुना मैदान में उतरती है इसमें मस्करी, कठ, हिंडन, कृष्णी, काली, सबी, करबत, गंभीर, सेंगर, छोटी सिंध, बेतवा, केन, चंबल आदि नदियां मिलती हैं। यमुनोत्री में तप्त (उष्ण, गर्म) कुण्ड भी है जिन्हें सूर्य कुण्ड, गौरी कुण्ड, द्रौपदी कुण्ड कहते हैं। गर्म कुण्ड में गर्मपानी देखकर प्रकृति का अद्भुत नजारा याद आता है। एक तरफ हाड़ कंपाने वाला ठण्डा पानी दूसरी ओर गर्म पानी के कुण्ड, प्रकृति के क्या नजारे हैं। प्रकृति अजूबों से भरी है, देखने, समझने, जानने वालों को दृष्टि, चाह, इच्छा, रूचि, तपस्या, साधना, दिशा, खोज, तप की जरूरत है।

यह भी कहा जाता है कि पहले यमुना घग्गर की सहायक नदी थी। इसे वैदिक सरस्वती के नाम से भी जाना जाता था। इसे सप्त सिन्धु सात झरने, स्रोत भी कहते थे। एक बड़ी प्राकृतिक घटना (टेक्टोनिक) में यमुना ने रास्ता

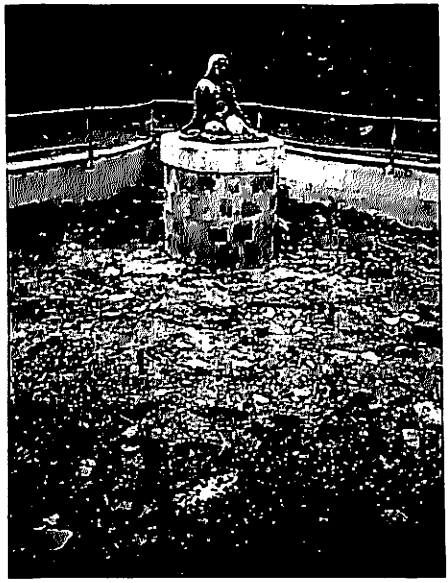

अब कचरा घर बन चुकी यमुना देवी।

बदला और यह गंगा की सहायक नदी बन गई। आज गंगा-यमुना का व्यापक, विशाल क्षेत्र है। यमुना के बारे में ऋग्वेद, अथर्वेद, ब्राह्मणस, अत्रेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण में भी चर्चा मिलती है। राजा सिकन्दर के साथी सेल्यूकस एवं ग्रीक यात्री मेगस्थनीज ने भी यमुना की चर्चा अपने लेखन में की है। तुगलक ने नहरे-बहिस्त (स्वर्ग की नहर) यमुना से निकाली, मुगलों ने इसकी मरम्मत की और इसे बेनवास से शाहजहांनाबाद तक बढ़ाया।

यमुना के क्षेत्र में हाथी भी पाए जाते हैं। शिवालिक पहाड़ियों पर साल, खैर, चीड़, रोजवुड के वृक्ष (वन) पाए जाते हैं।

हथिनी कुण्ड, ताजेवाला में यमुना का पानी रोका जाता है। जहां से पश्चिमी यमुना नहर और पूर्वी यमुना नहर निकाली गई। पश्चिमी यमुना नहर (डब्ल्यू वाई सी) हरियाणा के उत्तरी जिलों को जल प्रदान करती है। पश्चिमी यमुना नहर, यमुना नगर, करनाल, पानीपत होते हुए हैदरपुर ट्रीटमेंट प्लांट पहुंचती है, यहां से दिल्ली को पानी की पूर्ति की जाती है। दिल्ली, हांसी, सिरसा इसकी मुख्य शाखाएं हैं। पूर्वी यमुना नहर (ई वाई सी) सहारनपुर जिले में फैजाबाद से यमुना के बाएं किनारे से निकलकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिलों को जल प्रदान करती हुई दिल्ली के निकट फिर से यमुना में आ मिलती है। आगरा नहर दिल्ली के ओखला बैराज से निकलकर आगरा के पास फिर यमुना नदी में मिल जाती है। यमुना नदी घाटी में यमुना गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

यमुना नहर कभी शहर के चौक को चांदनी से धोती थी।

यमुना घाटी का क्षेत्र भी विशाल है विभिन्न काल खंड की दृष्टि से मशहूर शहर कुरूक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, मथुरा, वृंदावन (महाभारत), चित्रकूट (रामायण), उदयपुर, जयपुर, बूंदी, चितौड़गढ़ (राजपूताना), झांसी, ओरछा, मोहबा, काल्पी (बुंदेलखंड) इंदौर, ग्वालियर (मराठा), आगरा, भोपाल, पानीपत (मुगल) और भारत का राजनैतिक दिल दिल्ली भी यमुना की घाटी में आते है।

यमुना के किनारे दिल्ली जैसे महानगर के साथ-साथ बागपत, नोएडा, मथुरा, आगरा, इटावा, काल्पी, हमीरपुर, इलाहाबाद आदि शहर बसे हैं। टोंस, चम्बल, बेतवा, केन, हिंडन आदि यमुना की सहायक नदियां हैं। यमुना 1376 कि.मी. की दूरी तय करके इलाहाबाद में प्रयागराज में गंगा से जा मिलती है। इस तरह दोनों जुड़वां बहनें एक दूसरे में समा जाती है और यहां के बाद गंगा नाम से आगे बढ़ती है।

इसकी एक झलक हमें निम्न तालिका से कुछ स्पष्ट चित्र के रूप में प्राप्त होगीः

यमुना नदी–एक झलक

- कुल दूरी (लम्बाई) 1376 कि.मी., यमुनोत्री से प्रयागराज, इलाहाबाद
- प्रारंभ (उत्पति): यमुनोत्री (जमुनोत्री) उत्तराखंड से
- संगमः प्रयागराज, इलाहाबाद (उ.प्र.) में

भाग	राज्य कि.मी.	दूरी/लंबाई/ नाले	सहायक नदी/	बांध/बैराज	नहर
हिमालय यमुनोत्री से हथिनी कुण्ड	उत्तराखंड उ.प्र. हिमाचल	172 कि.मी.	कमल, गिरि, टोंस, असान	डाक पत्थर बैराज, असान बैराज	डाक पत्थर नहर, असान नहर
ऊपरी स्रोत (अपर स्ट्रीम) दिल्ली (समतल) हथिनी कुण्ड से वजीराबाद बैराज	हरियाणा उ. प्र. दिल्ली	224 कि.मी.	सोम नदी छोटी यमुना नाला नं. 2,8	हथिनी कुण्ड बैराज	पश्चिमी यमुना नहर, पूर्वी यमुन नहर
दिल्ली वजीराबाद बैराज से यमुना (आई. टी. ओ.) बैराज, ओखला बैराज	दिल्ली	22 कि.मी.	22 नाले(सूची अलग स्थान पर है) हिण्डन	वजीराबाद बैराज, यमुना बैराज (आई. टी. ओ.)	आगरा नहर
निचला स्रोत (डाउन स्ट्रीम) दिल्ली-ओखला बैराज से चंबल संगम	उ.प्र. हरियाणा	490 कि.मी.	हिण्डन, भूरिया नाला, मथुरा-वृंदावन नाला आगरा नाला	ओखला बैराज	आगरा नहर, गुडगांव-नहर
पुनर्जागृत, बहती यमुना, चंबल मिलन से गंगा संगम	उ.प्र.	468 कि.मी.	चंबल, केन, काली, सिंध, बेतवा	-	-
कुल लम्बाई		1376 कि.मी			

यमुना नदी घाटी क्षेत्र को जानने के लिए इसके विभिन्न पहलुओं को जानना, समझना उपयोगी एवं जरूरी है। इसकी मिट्टी कैसी है? इसमें क्या-क्या खनिज पाए जाते है? भूजल की स्थिति क्या है? क्षेत्र का तापमान कैसा रहता है, उसमें वाष्पीकरण एवं वर्षा की क्या स्थिति है? घाटी का भौगोलिक वर्गीकरण किस रूप में और कितना है? भूमि का उपयोग कैसे, किस रूप में हो रहा है? घाटी में कौन सी फसलें पैदा की जाती है? जलग्रहण क्षेत्र का क्या प्रभाव है? कौन सी सहायक नदियां यमुना को समृद्ध बनाती रही है? प्रदूषण की क्या स्थिति है? इन एक-एक मुद्दे पर हम अब कुछ जानकारी साझा करते है।

मिट्टी

यमुना नदी घाटी में विभिन्न तरह की मिट्टी पाई जाती है। कछारी (अल्यूविअल) सबसे ज्यादा 42%, मध्यम काली (मिडियम ब्लैक) 25.5%, लाल एवं काली मिश्रित 15%, गहरी काली 5.5%, लाल एवं पीली 5%, भूरी पहाड़ी (ब्राउन पहाड़ी) 4%, लाल बलूई (रेड सेन्डी) 2.5%, तथा चूनेदार (कैल्केरिअस सिरोजेमिक) 0.5%।

खनिज

खनिजों में यमुना नदी घाटी का क्षेत्र बहुत धनी नहीं है। कुछ सीमित ही खनिज क्षेत्र में उपलब्ध है जिनमें चूना का पत्थर की खदान मसूरी हिल्स तथा राजस्थान के कुछ हिस्सों में, पत्थर की खदान दिल्ली एवं झांसी (उ. प्र.) तथा कुछ स्थानों पर राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में पाई जाती है। इसके साथ ही हीरा की खदानें पन्ना (म. प्र.) में है। उदयपुर और खेतड़ी में तांबे की भी खदान हैं। खनिज के मामले में यमुना क्षेत्र सामान्य है।

भूजल की उपलब्धता

यमुना नदी घाटी में भूजल की उपलब्धता में भी पर्याप्त अंतर है। उत्तर-पूर्व के समतल में 15% क्षेत्र में अच्छा, व्यापक भूजल उपलब्ध है। यहां भूजल का स्रोत अच्छी मात्रा में है। सीमित मात्रा में भूजल 19% क्षेत्र में जयपुर, सवाई माधोपुर, भरतपुर, कोटा, ग्वालियर, जालौन, हमीरपुर और बांदा जिलों में उपलब्ध है। बहुत कम तथा प्रतिबंधित भूजल, हमीरपुर, बांदा जिलों के कुछ हिस्सों तथा पन्ना, दमोह जिले में उपलब्ध है, यह क्षेत्र लगभग 4% है।

प्रतिबंधित भूजल के साथ खारा एवं ब्रेकिश (सलाईन) लगभग 10% क्षेत्र भिवानी, रोहतक, महेन्द्रगढ़, गुडगांव, रेवाड़ी, मथुरा, आगरा जिलों के साथ-साथ दिल्ली आदि में उपलब्ध है। बहुत ही प्रतिबंधित स्थानीय भूजल हिस्सों में विभक्त 52% क्षेत्र में सारा पहाड़ी क्षेत्र, पठार (प्लेटू) समतल का हिस्सा टोंक, अलवर तथा उ.प्र., म.प्र. सीमा पर उपलब्ध है।

तापमान

यमुना नदी घाटी क्षेत्र में कार्यरत मौसम विभाग, भारत सरकार के शिमला, देहरादून, नई दिल्ली, हिसार, जयपुर, उज्जैन, भोपाल एवं इलाहाबाद स्टेशन के आंकड़ों पर नज़र डाले तो क्षेत्र के तापमान की स्थिति स्पष्ट होती है कि आमतौर पर एक जैसा ही सारे क्षेत्र में होता है। मध्य या मई अंत में तापमान सबसे ज्यादा तथा दिसंबर और जनवरी प्रारम्भ में तापमान सबसे निम्न स्तर पर रहता है। देहरादून, शिमला स्टेशनों को छोड़ दे तो आमतौर पर तापमान 40° सी. से 42° सी. के आसपास अन्य क्षेत्रों में तथा 36° सी. से 25° सी. देहरादून-शिमला में रहता है। निम्न तापमान अन्य क्षेत्रों में 5° सी. से 9° सी. तथा शिमला, देहरादून पहाड़ी क्षेत्र में निम्न स्तर तक भी जाता है। रात और दिन के तापमान में लगभग 15° सी. का अंतर गर्मी एवं सर्दी में आता है तथा वर्षा ऋतु (मानूसन) में 6 °सी. से 10° सी. का अंतर अन्य क्षेत्रों में पाया जाता है इसलिए कहा जा सकता है कि यमुना नदी घाटी क्षेत्र में पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर शेष अन्य क्षेत्रों में तापमान का मिजाज, स्वभाव, ढंग एक जैसा ही पाया जाता है तथा तापमान 5° सी. से 42° सी. के बीच रहता है।

वाष्पीकरण

यमुना नदी घाटी क्षेत्र में वाष्पीकरण भी सामान्यता एक जैसा ही पाया जाता है। निम्नतम वाष्पीकरण दिसम्बर जनवरी में तथा अधिकतम मई के आसपास होता है। फरवरी माह में थोड़ा-बहुत बढ़ना शुरू होता है जो मई तक बढ़ता है तथा वर्षा के साथ कम होने लगता है जो अगस्त में कुछ स्थानों पर कम हो जाता है। सितम्बर-अक्तूबर में फिर हल्का बढ़ता है, वर्षा के बाद और फिर सर्दी के मौसम में कम होने लगता है। मई माह में अलग-अलग स्थानों पर लगभग अधिकतम वाष्पीकरण उज्जैन में 450 मि.मी., जयपुर-दिल्ली में 350 से 400 मि.मी., हिसार, भोपाल एवं इलाहाबाद में 300 मि.मी., देहरादून में 250 एम. एम. तथा शिमला में 200 मि.मी. से नीचे रहता है।

हौज खासः दिल्ली की पानी- व्यवस्था के लिए खास ही था यह हौज।

यमुना का भौगोलिक वर्गीकरण (लगभग कि. मी. में)

वर्गीकरण	पहाड़ियों से पूर्ण	छोटी पहाड़ी, पठार (फुट हिल्स एवं प्लेटू क्षेत्र)	समतल एवं घाटी
राज्य	समुद्र तल से ऊंचाई 600 मीटर से ज्यादा	300 से 600 मी.	100 से 300 मी.
उत्तर प्रदेश	4,900	4,400	64,908
हिमाचल	5,200	599	-
हरियाणा	-	800	20,465
राजस्थान	1,600	55,610	45,673
मध्यप्रदेश	-	1,11,508	28,700
दिल्ली	-	-	1,485
कुल	11,700	1,72,917	1,61,231

भूतल

यमुना का भूतल स्तर अलग-अलग स्थानों पर बहुत अंतर रखता है। एक और समुद्र तल से यमुनोत्री में 6,320 मीटर ऊंचाई पर है तो दूसरी ओर इलाहाबाद में प्रयागराज में जहां गंगा से संगम होता है वहां समुद्रतल से 100 मीटर ऊंचाई है। इस प्रकार हम यमुना घाटी को मोटे तौर पर तीन हिस्सों में बांट सकते हैं, इसका वर्गीकरण तीन भागों में कर सकते है- पहाड़ी, छोटी पहाड़ियां (फुट हिल्स) एवं पठार (प्लेटू) क्षेत्र तथा समतल एवं घाटी। इसका विवरण इस प्रकार है-

कुल क्षेत्र का 3% पहाड़ी है, शेष लगभग आधा-आधा समतल एवं पठार (प्लेटू) में बंट जाता है। समतल क्षेत्र का लगभग 25% राजस्थान में तथा लगभग 18% मध्यप्रदेश में पड़ता है। इसमें चंबल के बीहड़ों का भी क्षेत्र पड़ता है।

वर्षा

यमुना नदी घाटी क्षेत्र में वर्ष में वर्षा का औसत भिन्न-भिन्न स्थानों पर अलग-अलग है। अधिकतम वर्षा 1600 मि.मी. और इससे अधिक भी सोलन वाया सिरमौर होते हुए टिहरी शहर तक की पट्टी में होती है। एक ओर वर्षा की औसत यह है तो दूसरी ओर उत्तर और दक्षिण में एकदम वर्षा का औसत नीचे आकर लगभग आधा 800 मि.मी. हो जाता है और यह मात्र 100 कि.मी. की दूरी से शुरू हो जाता है। नदी घाटी क्षेत्र के पश्चिमी भाग महेन्द्रगढ़, भिवानी में वर्ष में 400 मि.मी. और इससे भी कम औसत हो जाता है, जयपुर, अजमेर, गुडगांव, रोहतक जिलों में औसत 500 मि.मी. या इससे भी कम हो जाता है। इसमें पूर्व-दक्षिण का भी क्षेत्र शामिल है, देवास से इलाहाबाद बारास्ता भोपाल, सागर, दमोह, पन्ना का क्षेत्र आता है। पूर्व की ओर वर्षा का औसत बढ़कर 1000 मि.मी. के आसपास हो जाता है, पहाड़ी क्षेत्र एवं छोटी पहाड़ियों (फुट हिल्स) का क्षेत्र छोड़कर उत्तरी क्षेत्र में वार्षिक वर्षा का औसत केवल 500 से 800 मिली मीटर रहता है।

यमुना क्षेत्र के इस वर्षा औसत का विवरण देखें तो पायेंगे कि शेष भारत की तरह इस क्षेत्र में भी 90% वर्षा जून से सितम्बर के मध्य इन चार माह में ही हो जाती है। माह दृष्टि से देखें तो दिल्ली, जयपुर, इंदौर, भोपाल, इलाहाबाद में अधिक वर्षा जुलाई माह में होती है। क्रमशः 180, 200, 270, 450 और

300 मि.मी.। देहरादून, शिमला, हिसार में अगस्त माह में अधिकतम वर्षा क्रमशः 700, 450 और 130 मि.मी. होती है।

जब वर्षा नहीं होती है तो वर्षा के लिए विभिन्न धर्मों में पूजा-पाठ, यज्ञ आदि करने की परम्परा है। अच्छी वर्षा (बारिश) की दुआओं के लिए की जाने वाली विशेष नमाज़ को 'नमाज ए इस्तिश्ता' कहते है। मौहम्मद साहब ने भी यह नमाज़ अदा की थी। अनेक धर्मों में इस संबंध में विभिन्न प्रयासों की चर्चा है।

यमुना नदी घाटी प्रणाली गंगा-ब्रह्मपुत्र नदी घाटी प्रणाली का हिस्सा है इसलिए भारत सरकार ने इसके बहाव के आंकड़ों को 'गुप्त' रखने की घोषणा कर रखी है। इसलिए बहाव के आंकड़े कभी कहीं किसी के द्वारा कुछ बताए जाते हैं कभी कुछ। सरकारी स्तर पर आंकड़े उपलब्ध नहीं है। फिर भी इसके बहाव को उपलब्ध जानकारी के आधार पर चार हिस्सों में बांटा जा सकता है:

— वर्षा ऋतु जून से सितम्बर इसमें अच्छा तेज बहाव वर्षा पर आधारित रहता है। वर्षा के अनुसार बहाव में तेजी आती है।

— वर्षा ऋतु के बाद का समय अक्तूबर-नवम्बर में बहाव में गिरावट आती है और बहाव रूके पानी, इकट्ठे हुए पानी, सरचार्जड आदि से बना रहता है।

— सर्दी का मौसम दिसम्बर से फरवरी तक बहाव भूतल के संरक्षित पानी, खेती एवं गंदे नाले, खराब पानी पर आधारित रहता है मगर बहाव में गिरावट जारी रहती है, सर्दी की वर्षा के समय बहाव में आए अंतर को छोड़कर।

— गर्मी का मौसम मार्च से मई भी सर्दी के मौसम जैसा ही बहाव रहता है। मगर इसमें हिमालय से पिघलने वाली बर्फ का हिस्सा जुड़ जाता है जितनी बर्फ पिघलती है उसी के अनुसार बहाव में पानी जुड़ जाता है।

यमुना घाटी का वार्षिक बहाव बहुत बड़ा है एक लाख करोड़ (100 बिलियन) क्यूबीक मीटर। इसमें 80% तीन मानसून माह में होता है। गर्मी का बहाव एक लाख क्यूबीक मीटर प्रतिदिन (एम.सी.एम. प्रतिदिन) और 1.2 क्यूबीक मीटर प्रति सेकण्ड दिल्ली में होता है और मथुरा-इटावा में 0.3 एम.सी.एम. प्रतिदिन (3.5 एम^3 सेकण्ड) है।

सिंचाई

यमुना से सिंचाई के लिए पूर्वी-पश्चिमी यमुना नहरों के माध्यम से ताजेवाला से कुल 6000 करोड़ (6 बिलियन) क्यूबिक मीटर (बी सी एम) पानी लिया जाता है। अर्थात मानसून में 2.8, वर्षा के बाद 0.9, सर्दी में 0.9 और गर्मी में 1.4 बिलियन क्यूबिक मीटर (बी सी एम) पानी नहरों में सिंचाई के लिए छोड़ा जाता है। ओखला में आगरा नहर में कुछ 2.1 बिलियन क्यूबिक मीटर (बी सी एम) पानी छोड़ा जाता है, सिंचाई के लिए। जिसका बंटवारा वर्षा मानसून में 0.9, वर्षा के बाद 0.4, सर्दी में 0.4 और गर्मी में 0.4 बिलियन क्यूबीक मीटर (बी सी एम) है।

कृषि भूमि का 25% हिस्सा ही किसी भी प्रकार की सिंचाई के अन्तर्गत आता है। सिंचाई व्यवस्था को अच्छा व्यवस्थित बनाना है तो वर्षा के पानी के प्रबंधन को जानना-समझना होगा। अब नहर की व्यवस्था को बढ़ाना बहुत ही कठिन है। आज जो नहरें हैं वे भी अपेक्षित पानी नहीं दे पा रही है। गैर खेती की जमीन पर वनस्पति लगाई जाए तो भविष्य में बहुत लाभ होगा।

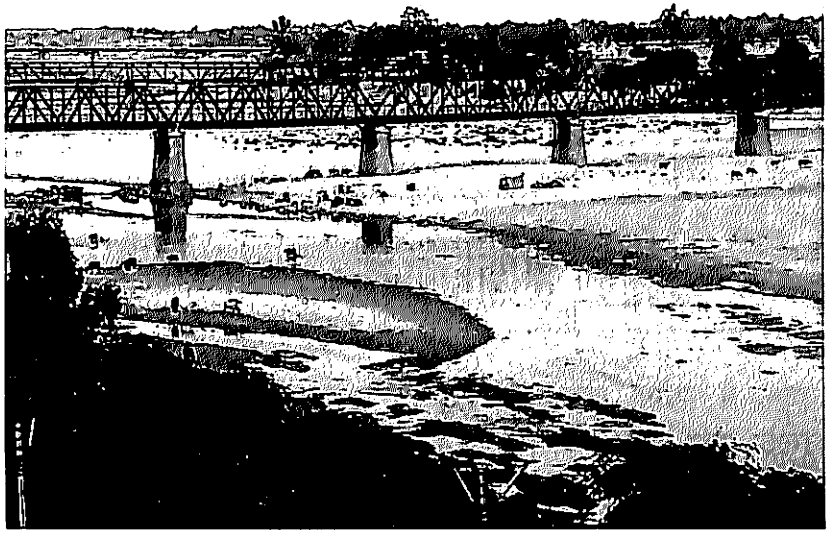

पुल बड़ा, पर नदी छोटी रह गई।

यमुना से पानी का निष्कासन (मोड़ना)

साथ ही बिजली (विद्युत) पैदा करने, सिंचाई करने तथा पीने के पानी की व्यवस्था करने के लिए यमुना के पानी को मोड़ा (बदला), रोका भी जाता है, उसकी राह बदली जाती है। विवरण इस प्रकार है:-

स्थान	ढांचा	राज्य	उद्देश्य	नदी की स्थिति
डाक पत्थर	बैराज	उत्तराखंड	बिजली उत्पादन (विद्युत)	नहर में पानी छोड़ा जाता है।
असान	बैराज	उत्तराखंड	विद्युत उत्पादन	नहर में पानी छोड़ा जाता है।
हथिनी कुंड	बैराज	उत्तर प्रदेश/ हरियाणा	सिंचाई/पीने का पानी	पश्चिमी एवं पूर्वी नहर में पानी छोड़ा जाता है। सूखे मौसम (गर्मी) में आगे पानी नहीं
वजीराबाद	बैराज	दिल्ली	पीने का पानी	गर्मी (सूखे मौसम) में आमतौर पर पानी नहीं।
आई.टी.ओ. पुल	बैराज	दिल्ली	पावर हाउस को पानी	नालों से पानी उपलब्ध
ओखला	बैराज	दिल्ली/ उत्तर प्रदेश	आगरा नहर को पानी	गर्मी (सूखे मौसम) में आमतौर पर पानी नहीं

यमुना से उद्योगों तथा शहर (बस्ती) के लिए जो पानी लिया जाता है उसका सारा पानी तो नहीं मगर बड़ी मात्रा में पानी गंदगी, कचरा, खराब पानी के रूप में यमुना में वापिस मिल जाता है जो यमुना को प्रदूषित करता है।

भूमि का उपयोग

यमुना नदी घाटी क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि और कृषि के अयोग्य भूमि दोनों ही है। खनिज आदि की अधिकतर खदानें अयोग्य कृषि भूमि में ही है इससे सीधे खेती भूमि को नुकसान नहीं होता मगर खदानों के कारण खेती कुछ प्रभावित जरूर होती है। दूसरी ओर उद्योग, मानव बस्ती (निवास), यातायात, सड़क आदि एवं अन्य शहरी कार्यों में कृषि योग्य तथा कृषि अयोग्य दोनों तरह की जमीन का उपयोग किया जा रहा है इससे खेती की जमीन का बड़ा नुकसान हुआ है, हो रहा है, खेती बहुत प्रभावित हुई है विशेषकर दिल्ली और उसके आसपास तो खेती कुछ क्षेत्रों में तो लगभग समाप्त प्रायः हो गई है। उद्योग, आबादी एवं संचार यातायात प्रणाली के विकास के कारण जमीन पर भयंकर दबाव आया है, इससे खेती की जमीन पर भी तेजी से दबाव पड़ा, खेती तो कई स्थानों पर समाप्त हो गई है।

यमुना नदी घाटी क्षेत्र जमीन को मुख्य रूप से कृषि योग्य, कृषि अयोग्य तथा वन क्षेत्र में बांटा जा सकता है, इस प्रकार 12.5% वन क्षेत्र, 27.5% गैर कृषि (जोतने योग्य नहीं) तथा 60% कृषि योग्य भूमि है। कृषि योग्य भूमि में पूरी तरह खेती नहीं हो पाती है क्योंकि इसके दूसरे प्रयोग भी हो रहे हैं। जमीन का प्रयोग कुछ स्थानों पर तेजी से बदल रहा है। हर क्षेत्र की जमीन का प्रयोग अलग-अलग है। कुछ जिलों में कृषि योग्य भूमि का 90% तक भी काम में लाया जा रहा है। दिल्ली में सड़क, संसद, राष्ट्रपति भवन, सरकारी निवास, हवाई अड्डा, रेलवे, सरकारी भवन, कार्यालय, उद्योग, पुल, शिक्षण संस्थाएं, अस्पताल, बाजार, मकान, सार्वजनिक सुविधाएं एवं समुदाय आदि के काम में जमीन का बड़ा भाग उपयोग हो रहा है। दिल्ली, देहरादून, मुजफ्फरनगर, मेरठ, आगरा में विशेषकर जमीन पर दबाव बना हुआ है तथा इन क्षेत्रों में जमीन लगभग उपलब्ध नहीं है या बहुत कम कहीं उपलब्ध हो पाती है इसलिए यमुना खादर में कब्जा, निर्माण तेजी से बढ़ा है। यमुना को चारों ओर से घेरा जा रहा है।

फसलें

क्षेत्र में कुछ फसलें ऐसी हैं जिसमें सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है, कम पानी की जरूरत पड़ती है, इनमें बाजरा, मक्का, जौ, मटर, चना, दालें आदि शामिल

है। कुछ फसलें ऐसी हैं जिनमें सिंचाई, पानी की ज्यादा जरूरत पड़ती है। गन्ना, गेहूं, चावल आदि फसलों में ज्यादा पानी की जरूरत होती है। सिंचाई के लिए भूतल जल का प्रयोग कुंए, ट्यूबवेल के रूप में तथा नहर के पानी का प्रयोग होता है। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि मानसून में यमुना का बहाव दो तिहाई रहता है। जब सिंचाई की कम जरूरत पड़ती है। जब सिंचाई की जरूरत का समय होता है तब यमुना का बहाव कम होता है इसलिए यमुना की नहरों में इस समय कम पानी छोड़ा जा सकता है। पूर्वी-पश्चिमी यमुना नहर को ताजेवाला से तथा आगरा नहर को ओखला से ही कुछ पानी मिल पाता है। पानी की कमी की पूर्ति के लिए गंगा-गंगानदी घाटी क्षेत्र से पानी लिया जाता है तथा उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्र को ऊपरी एवं निचली गंगा नहर से पानी मिल पाता है। हरियाणा को भाखड़ा नहर का पानी भी मिलता है।

प्रत्येक मनुष्य, पशु-पक्षी, अधिकतर आर्थिक कार्य को पानी की जरूरत है। पानी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना आसान काम नहीं है। पानी

यमुना नदी का जलग्रहण क्षेत्र एक दृष्टि में:

राज्य	**कुल क्षेत्र यमुना जलग्रहण में वर्ग कि.मी.**	**मुख्य सहायक क्षेत्र (वर्ग कि.मी)**				
		हिंडन	चंबल	सिंध	बेतवा	केन
उत्तर प्रदेश	74,208	7,083	452	748	14,438	3,336
हिमाचल	5,799	-	-	-	-	-
हरियाणा	21,265	-	-	-	-	-
राजस्थान	1,02,883	-	79,495	-	-	-
मध्य प्रदेश	1,40,208	-	59,838	25,131	33,502	21,090
दिल्ली	1,485	-	-	-	-	-
कुल	3,45,848	7,083	1,39,785	25,879	47,940	24,426
प्रतिशत	100%	2%	40.5%	7.5%	13.9%	7.0%

के प्रयोग में मछली आदि का पालन, भोजन के लिए फसलें-वृक्ष आदि पैदा करना, लगाना, यातायात का प्रयोग, नहाना, कपड़े-धोना, भोजनादि पकाना, धुलाई, सफाई के लिये प्रयोग, तैरने, नाव चलाने एवं मनोरंजन के लिए, पशु को नहलाना, पानी पिलाना, सिंचाई के लिए प्रयोग खेत, बाग, पार्क आदि के लिए, घरेलू एवं नगर निकायों के लिए, उद्योग धन्धों के लिए, जल भंडारण आदि आते हैं। यमुना नदी घाटी क्षेत्र में बड़ी नाव, जहाज आदि का प्रयोग नहीं हो पाता है, इसका मुख्य कारण पानी की मात्रा, बहाव की कमी है।

वर्गीकरण	**पानी का उपयोग**
ए.	पीने का पानी एवं घरेलू आपूर्ति बिना शोधन के
बी.	नदी स्नान, तैरने और पानी के खेलों में
सी.	नगर निगम आपूर्ति के लिए कच्चा पानी-उपयोग से पहले शोधन, उपचार जरूरी
डी.	वन जीव, पशु एवं मछली पालन
ई.	खेती, औद्योगिक कूलिंग एवं धुलाई, जल विद्युत उत्पाद एवं नियंत्रित वेस्ट डिस्पोजल

यमुना की दो मुख्य सहायक नदियां चंबल और बेतवा की अपनी सहायक नदियां भी है। धसान, पार्वती बेतवा की एवं बनास चंबल की मुख्य सहायक नदियां है। इन उप सहायक नदियों को अपना क्षेत्र धसान 17,364 वर्ग कि.मी., बनास 47,463 वर्ग कि.मी. तथा पार्वती का 18,730 वर्ग कि.मी. है। टोंस, असान, गिरी से उर्जा उत्पादन भी किया जाता है। पाहुज (सिंध की सहायक) बाधैन एवं पईसुनी की अपनी सिंचाई प्रणाली है। कृष्णी (हिंडन की सहायक), तथा खान (चंबल की सहायक) औद्योगिक एवं घरेलू गंदगी, कचरा बड़ी मात्रा में लाती है जिससे पानी की व्यवस्था को बर्बाद, गड़बड़ करती है।

यमुना का जल ग्रहण क्षेत्र गंगा के कुल क्षेत्र का 40.2% है तथा कुल देश की जमीन का 10.7% है।

घरेलू प्रदूषण

यमुना नदी के लिए उत्तराखंड का देहरादून, हरियाणा का यमुना नगर, करनाल, पानीपत, सोनीपत, फरीदाबाद, बल्लभगढ़, उ.प्र. का सहारनपुर, मुजफ्फरनगर,

बागपत, गाजियाबाद, नोएडा, मथुरा, आगरा, तथा दिल्ली घरेलू प्रदूषण का मुख्य स्रोत है। इन शहरों का घरेलू कचरा यमुना नदी को प्रदूषित करता है। घरेलू आवश्यकता के लिए पानी की मांग दिनों दिन बढ़ती जा रही है और तदनुसार गंदे पानी की मात्रा भी बढ़ती जा रही है, विशेषकर सीवेज की जिसका उपचार, शोधन एवं प्रबंधन भी ठीक ढंग से नहीं हो पाता है। इससे नदी के पानी की गुणवत्ता गिरती जाती है। प्रदूषण बढ़ाने में पशुपालन, स्नान, खुले में शौच जाना, कपड़े धोना आदि शामिल है। इसके साथ-साथ भारतीय नदियों में पूजा-पाठ, यज्ञादि की सामग्री बहाना भी एक प्रदूषण का मुख्य स्रोत है। घर या सार्वजनिक स्थान पर पूजा के बाद बची हुई सामग्री को जल विशेषकर नदी में प्रवाहित करने की परम्परा है, इससे नदियों में बड़ी मात्रा में प्रदूषण बढ़ता है। यमुना में भी यह सामग्री बड़ी मात्रा में डाली जाती है।

जुगाड़ू नाव पर श्रद्धालुओं के बीच रोजगार की तलाश में।

कृषि प्रदूषण

कृषि प्रदूषण में मुख्य तौर पर खाद, कीटनाशक, पशु आदि शामिल है। खेती में खाद, रसायन, कीटनाशकों का बढ़ता प्रयोग नदी को प्रदूषित करने का एक बड़ा स्रोत बनता जा रहा है।

भूजल से सिंचाई के लिए उर्जा की भी जरूरत पड़ती है। सिंचित जमीन में कई फसलें ली जा रही है। कीटनाशकों के रूप में ऑर्गनो-क्लोरिन (ओ.सी.) ऑर्गनों फासफोरस (ओ.पी.) एवं अन्य दवाओं का प्रयोग किया जा रहा है।

यमुना नदी घाटी में 1980 के आसपास खाद 1,94,000 टन नाइट्रोजन, 53,000 टन फासफोरस तथा 16,000 टन पोटेशियम के साथ-साथ 2,000 टन से ज्यादा बायोसाईडस वार्षिक प्रयोग किया जाता रहा। खेती के विकास के साथ आज इसकी मात्रा चार गुणा से पांच गुणा तक बढ़ गई है। ताजेवाला बैराज से इटावा तक यमुना पानी के मामले में चिंताजनक स्थिति में रहती है। नदी घाटी में 25% तक वन (जंगल) लग जाए तो अच्छा हो। इसका अर्थ है कि वनस्पति पेड़-पौधे तेजी से लगाने चाहिए जिससे 12.5% से वन 25% हो जाए। प्रदूषित सामग्री, कचरा, सीवेज आदि का नदी में डालना बंद हो तभी सुधार की गुंजाईश बनेगी।

औद्योगिक प्रदूषण

आजादी के बाद उद्योग-धन्धे, निर्माण, आबादी तेजी से बढ़ीं। 1980-85 के बाद तो शहरों का विस्तार बहुत ही तेजी से हुआ। शहरों की संख्या में जबर्दस्त बढ़ोतरी हुई और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में तेजी आई। लोगों में उपभोक्तावाद के प्रति रूझान बढ़ा। हर क्षेत्र में गति बढ़ी, उपभोग की प्रवृति का तेजी से विस्तार हुआ, साधन-सुविधाओं की उपलब्धता में भारी बदलाव आया।

खुलापन, निजीकरण (प्राइवेटाइजेशन) एवं वैश्वीकरण (ग्लोबलाईजेशन) जिसे एल पी जी के नाम से जाना जाता है। इसमें पहला शब्द का हिन्दी अनुवाद उदारीकरण किया गया जो कि गलत है। उदार शब्द एक सक्रिय, साकार, अच्छाई का द्योतक है जबकि इन उदार नीतियों के नाम पर लाभ, लोभ, लूट, कब्जा, शोषण के द्वार खोले जा रहे है। इनके लिए उदार शब्द का प्रयोग अपराध, पाप है। उदार शब्द की बेइज्जती, मजाक है। इसे ही उदारता कहते हैं तो लोभ, लालच, लूट, कब्जा, पाखंड, शोषण, धोखा किसे कहा जाएगा?

केन्द्रीय प्रदूषण कन्ट्रोल बोर्ड की रिपोर्ट बताती है कि हरियाणा के 22 उद्योग, 42 यूनिट दिल्ली तथा 17 यूनिट उत्तर प्रदेश में यमुना में सीधे अपना औद्योगिक कचरा, रसायन, मैला डालते है। इसमें पेपर, चीनी, केमिकल (रसायन) चमड़ा,

शराब, दवा, पावर आदि के उद्योग शामिल है। बोर्ड की रिपोर्ट ही स्वयं इसको मानती है और कोई कार्रवाई इसे रोकने के लिए नहीं होती है तो तब किससे यमुना बचाने की गुहार लगाई जाए? नीति एवं नियत दोनों ने ही यमुना को मार दिया है। मनुष्य की नियत भी बदल गई, पानी, नदी के प्रति उसके भाव में अंतर (बदलाव) आया है। कोई भी घटना घटने से पहले किसी के मन में उसकी योजना बनती है। यमुना मानसिक स्तर पर पहले लोगों के मन में मर गई। नदी से लोगों का संबंध टूटा, तोड़ा गया। उसका परिणाम है कि नदी मर गई, मर रही है। खत्म हो रही है। नीतियों ने भी पानी, नदी के प्रति भाव बदले, अधिकार बदला जिसका परिणाम आज हम सबके सामने है इसलिए पानी, नदी के प्रति नियम एवं नीति दोनों में आमूल-चूल बदलाव की जरूरत है।

हमारा प्रकृति से संबंध कटा है, दूरी बढ़ी है इसका परिणाम है कि प्रदूषण की समस्या 'सुरसा' की तरह मुंह फैलाए हमारे सामने खड़ी है। ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ रहा है। नदी, नाले, तालाब मरते जा रहे है। पानी का भयंकर संकट खड़ा किया जा रहा है। पानी की समस्या को विकराल बना कर पानी का व्यापार धन्धा शुरू किया जा रहा है। जबकि पानी को जाति और धर्म के बंधन से मुक्त माना जाता है। पानी सभी का है। चींटी से लेकर हाथी तक सभी का इस पर समान एवं पूरा हक है। मानवता और सृष्टि की रचना को बनाए रखना ही पानी का गुण है।

यमुना देश की सबसे ज्यादा प्रदूषित नदी है। घरेलू, कृषि तथा औद्योगिक प्रदूषित मल, कचरा इसे गंदा, प्रदूषित करते है।

यमुना जल में बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमाण्ड बी.ओ.डी. की मात्रा 14 से 28 मि.ग्रा. प्रति लीटर तक पाई गई। इसी तरह कॉलीफॉरम की मात्रा भी बहुतायत में पाई गई। दुनिया की सबसे प्रदूषित नदियों में यमुना को रखा जाता है। यमुना में 3296 मिलियन लीटर (एम.एल.डी.) सीवेज प्रतिदिन डाला जा रहा है। दिल्ली अपना आधे से अधिक 58% कचरा, मल सीधे यमुना में डालती है।

यमुना की जो सहायक नदियां है वे भी अब कचरा-कूड़ा, गंदगी यमुना में डालती है। हिंडन अपनी सहायक नदियों के माध्यम से भयंकर गंदगी लाकर

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने यमुना नदी के अध्ययन जांच के लिए 6 स्टेशन बनाए हुए है।

यमुना नदी पर दिल्ली तक केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के स्टेशन

क्रम सं.	नाम	स्थान	विवरण	वर्ग
1.	हथिनी कुंड	ताजे वाला बैराज से 2 कि.मी. ऊपर	यमुना के पानी की गुणवत्ता हेतु	ए/बी
2.	कलानौर	यमुना नहर से 7 कि.मी. पूर्व में यमुना पुल पर (यमुना नगर-सहारनपुर रोड)	सोम नदी का प्रभाव नदी के पानी की गुणवत्ता पर	सी
3.	सोनीपत	सोनीपत शहर से 20 कि.मी. पूर्व में यमुना पुल पर (सोनीपत वागपत रोड)	करनाल-पानीपत शहर के पानी का प्रभाव	सी
4.	पल्ला	वजीराबाद बैराज से 23 कि.मी. ऊपर की ओर	सोनीपत जिले के पानी का प्रभाव दिल्ली के लिए पानी की गुणवत्ता	सी/डी
5.	निजामुद्दीन	वजीराबाद से 13 कि.मी. नीचे की ओर	दिल्ली के गंदे पानी का प्रभाव	ई
6.	आगरा शहर	वजीराबाद बैराज से 26 कि.मी. नीचे की ओर	ओखला बैराज के बाद दिल्ली के पानी का प्रभाव	ई

नोएडा के पास दिल्ली यमुना में मिलती है। जो सहायक नदियां यमुना को सदानीरा, सतत बहने में मदद करती थी आज उन्होंने अपना रूख, दशा एवं दिशा बदल दी है। अब नदी कूड़ा, कचरा, गंदगी, प्रदूषण की वाहक बनाई जा रही है, कुछ को तो बना ही दिया गया है। जलनीति, प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, यमुना एक्शन प्लान, जल बोर्ड आदि अनेक संस्थाओं के रहते न्यायालय, उच्च न्यायालय, सर्वोच्च न्यायालय, सरकारों के बावजूद नदियां मर रही है। प्रदूषित हो रही है, खत्म हो रही है, बिक रही है। इनको बचाने के लिए बने संस्थानों का खर्चा दिनों दिन बढ़ता जा रहा है, संख्या भी बढ़ती जा रही है मगर नदियों का मरना, प्रदूषित होना नहीं रुक पा रहा है। इन संस्थानों पर

प्रदूषित यमुनाः कौन बचाएगा।

सवाल उठ रहे हैं। यह संस्थान अब शक के घेरे में आ रहे है। नदियों की दशा एवं दिशा देखकर स्पष्ट होता है कि संबंधित संस्थान एवं अधिकारी अपने कर्तव्य को नहीं निभा पा रहे है, अपनी जिम्मेदारी के प्रति वे लापरवाह है, कहीं कोई गड़बड़ी, दबाव, प्रभाव है जो उन्हें अपने कर्तव्य से रोकता है। सत्ता, पैसा, लोभ, रिश्वत, भय, दबाव, भ्रष्टाचार आदि की भूमिका से कदापि किसी भी स्तर पर नकारा नहीं जा सकता। क्या हम सब बिक्री की वस्तु बन गए हैं? हम सबकी कीमतें लग गई है? हमारी कोई कर्तव्य, नैतिकता की जिम्मेदारी नहीं रही है? हमारा उत्तरदायित्व समाप्त हो गया है क्या?

यह सूची स्पष्ट कर रही है कि इतनी एजेन्सियों के होते हुए भी नदियां मर रही है। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है।

नदी से संबंधित सरकारी एजेन्सियां

दिल्ली जल बोर्ड (डी.जे.बी.), दिल्ली सरकार

पर्यावरण विभाग (डी.ई.), दिल्ली सरकार (एन.सी.टी.)

भूमि और भवन विभाग (डी.एल.बी.), दिल्ली सरकार (एन.सी.टी.)

नगर विकास विभाग (डी.यू. डी.), दिल्ली सरकार (एन.सी.टी.)

सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण विभाग(आई.एफ.सी.डी.) दिल्ली सरकार (एन.सी.टी.)

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सी.पी.सी.बी.), भारत सरकार
पर्यावरण एवं वन मंत्रालय (एम.ओ. ई.एफ.), भारत सरकार
नगर विकास मंत्रालय (एम.यू.डी.), भारत सरकार
जल संसाधन मंत्रालय (एम.डब्ल्यू. आर.), भारत सरकार
केन्द्रीय भूतल जल बोर्ड (सी.जी.डब्ल्यू.), भारत सरकार
ऊपरी यमुना नदी बोर्ड (यू.वाई.आर.बी.), भारत सरकार
दिल्ली विकास प्राधिकरण (डी.डी.ए.), भारत सरकार
केन्द्रीय जल आयोग (सी.डब्ल्यू. सी.), भारत सरकार
उत्तराखंड सरकार
हिमाचल प्रदेश सरकार
उत्तर प्रदेश सरकार
राजस्थान सरकार
हरियाणा सरकार
प्रदेश सरकारों के विभिन्न विभाग आदि

सतलुज-यमुना नहर

सतलुज-यमुना लिंक नहर (एसवाईएल) की भी एक योजना चल रही है जो पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक बनाई जाएगी जो उत्तर-मध्य भारत को बड़ी सुविधा प्रदान करेगी, ऐसा प्रचार किया जा रहा है। कहा जा रहा है तैयार होने पर इसमें अरब सागर तक जहाज भी चल सकेंगे। इस नहर पर कुछ काम हुआ भी हैं इसको लेकर तनाव एवं झगड़े भी चल रहे हैं। कहा जा रहा है कि सतलुज-यमुना लिंक नहर एक बड़ी योजना है, इससे बड़े परिवर्तन होंगे मगर अभी तो यह योजना खटाई में पड़ी है।

हरियाणा में कुछ गांवों में यमुना सूखने पर लोगों को दुःख हैं इससे हो रहे नुकसान को भी लोग जानते एवं देख रहे है। कहीं-कहीं, कभी-कभी किसी जागरूक नागरिक, संस्था के कहने पर हल्की सरसराहट भी नजर आती है मगर कोई बड़ी चिंता या चुनौती बनकर बात नहीं उभर रही है। हल्के-फुल्के कुछ प्रयास तो जरूर हो रहे हैं। कभी तो जागरूकता आएगी ही।

कहीं-कहीं तो आवाज उठ रही है: 'हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए'।

दिल्ली में यमुना

यमुना के किनारे बसे शहरों में दिल्ली सबसे बड़ा नगर है, महानगर है। दिल्ली में पल्लागांव, वजीराबाद से 15 कि.मी. पहले यमुना प्रवेश करती है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में यमुना कुल 48 कि.मी. की यात्रा तय करती है। दिल्ली की आबादी तेजी से बढ़ती हुई डेढ़ करोड़ से ऊपर पहुंच चुकी है। इसकी आबादी तथा जीवन पद्धति के कारण शहर को ज्यादा पानी, बिजली आदि संसाधनों की जरूरत है। संसाधनों में असमानता की खाई बहुत तेजी से बढ़ रही है, अन्तर रात-दिन से भी ज्यादा बढ़ रहा है।

दिल्ली भारत की राजधानी है। लम्बे समय से दिल्ली राजनैतिक हलचल का स्थान, अड्डा, अखाड़ा रहा है। इसने अनेक उतार-चढ़ाव बदलाव देखे, झेलें है। दिल्ली कितनी ही बार बसी और उजड़ी है। भग्नावशेषों पर फिर बनी, फिर उजड़ी यह अनेक बार हुआ है। दिल्ली ने अनेक राज्य वंशों, राजाओं को देखा और जाना है। दिल्ली का अपना एक इतिहास रहा है। 1947 तक "सिरी", "तुगलकाबाद", "जहांपनाह", "फिरोशाबाद", "पुराना-किला", "शाहजहांनाबाद", "नई दिल्ली"- सात दिल्ली नगरियां बसाई गई। दिल्ली में पहले अपने गांव,

खेती-बाड़ी तथा एक अलग जीवन भी रहा है। आज गांव लगभग समाप्त कर दिए गए है। गांवों को घेर दिया गया है। उसकी जमीन पर बड़ी-बड़ी कालोनियां बस गई है या बसाई जा रही है। दिल्ली में गांव अपनी अंतिम सांसे गिन रहे हैं। विकास के नाम पर गांवों को लील गया है।

दिल्ली का विस्तार आज भी जारी है। सीमेंट, कंकरीट का भयंकर जंगल तैयार हो रहा है। आबादी भी हर रोज तेजी से बढ़ रही है। दिल्ली की आबादी डेढ़ करोड़ की संख्या को बहुत पहले पार कर चुकी है। इसमें रोज बड़ी संख्या जुड़ती जा रही है। नये-नये निर्माण, सरकारी, गैर सरकारी, छोटे-बड़े, वैध-अवैध सब पर तेजी से काम चल रहा है। नेता, अधिकारी, प्रॉपर्टी डीलर और अपराधी गठजोड़ विकसित हो रहा है, जो नई-नई योजनाएं बनाता है, निर्माण का धन्धा चला रहा है।

दिल्ली के इतिहास में अनेक गौरव गाथाएं जुड़ी हैं तो कई काले धब्बे भी दिल्ली के माथे पर लगे है। यमुना भी इन सबकी साक्षी रही है। नवें गुरू तेग बहादुर का शीश चांदनी चौक में बलिदान किया जाना, बहादुरशाह जफ़र के लड़कों को अंग्रेजों द्वारा मौत के घाट उतारा जाना, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को नाथूराम गोडसे द्वारा गोली मारा जाना आदि घटनाओं को भी दिल्ली तथा यमुना ने देखा है।

आज ताज के पीछे की जमुना का ये हाल है।

आज यमुना की जो दशा और दिशा हो गई है। इससे यमुना दिल्ली के किसी कोने में छुपी बैठी है या छुपा दी गई है। वजीराबाद बैराज में उसे बंदी बना लिया गया है। यमुना दिल्ली में लगभग पूरी तरह मार दी जाती है। वजीराबाद बैराज के बाद यमुना में वर्षा ऋतु को छोड़कर पानी के स्थान पर मल, कचरा, रसायन, गंदगी बहती है। इसमें वजीराबाद से लेकर ओखला तक 22 कि. मी. क्षेत्र में 22 नाले डाले जाते हैं। नजफगढ़, मैगजीन रोड, स्वीपर कालोनी, खैबर पास, मैटकाफ, कुदसिया बाग, मोट, यमुना पार नगर निगम, मोरी गेट, सीविल मिल, पावर हाउस, सेन नर्सिंग होम, नं. 14, बारापुला, महारानी बाग, कालकाजी, ओखला, तुगलकाबाद, शाहदरा, सरिता विहार, एल.पी.जी. बोटलींग प्लान्ट, तेहखंड नाम के 22 नाले यमुना नदी में दिल्ली की गंदगी, कचरा-कूड़ा, मल-मूत्र, रसायन आदि डालते हैं। इनमें घरेलू, उद्योग-धन्धों, फैक्टरियों, कारखानों आदि का सारा कचरा, गंदगी आती है। 22 कि.मी. में यमुना का पानी पूरी तरह से नदारद है।

यमुना के सामने इन सबके अलावा भी अनेक चुनौतियां खड़ी है। दिल्ली में पहले सुरक्षा के नाम पर पुश्ता के माध्यम से नदी को बांधा गया, नदी की सीमा तय करने का प्रयास हुआ। नदी खादर, नदी क्षेत्र में निर्माण का कार्य जोरों से चला। दिल्ली सचिवालय सहित सरकारी-गैर सरकारी इमारतें, भवन बने, आज भी निर्माण जारी है। अक्षरधाम जैसे बड़े खर्चीले मंदिर भी यमुना के खादर क्षेत्र में बनाए गए। मेट्रो रेल सी आधुनिक विकास की कड़ी ने भी नदी के खादर क्षेत्र को नहीं बख्शा, पहले यमुना पर मात्र लालकिले के पास एक लोहे वाला पुल था, आज वजीराबाद, शांतिवन, आई.टी.ओ., निजामुद्दीन, नोएडा के साथ-साथ कुछ नये पुल भी निर्माणाधीन है। बढ़ती आबादी की आवश्यकतापूर्ति के लिए इन्हें आवश्यक बताया जा रहा है। राष्ट्र संघ खेल भी अगर दिल्ली में होने हैं तो यमुना का खादर ही सुरक्षित, सहज-सरल उपलब्ध, एवं उपयोगी स्थल माना जाता है और धड़ल्ले से निर्माण कार्य किया जाता है। पावर हाउस भी बनने हो तो यमुना का किनारा ही सर्वोत्तम माना जाता है। राजघाट, इंद्रप्रस्थ, बदरपुर पावर हाउस की राख या सामग्री भी यमुना को समर्पित की जाती है। यमुना मां का आंचल मैल एवं मल से भरा जा रहा है।

दिल्ली में यमुना पर वजीराबाद, आई.टी.ओ. एवं ओखला बैराज बनाए गए। वजीराबाद बैराज यमुना का सारा पानी रोक लेता है। आई.टी.ओ., ओखला

बैराज गंदे नालों को संभालते हैं। ओखला में पानी शोधन का प्रयास किया जाता है और कुछ पानी शोधन के साथ आगरा नहर के द्वारा आगे बढ़ता है जो कि आगरा के पास यमुना में मिल जाता है।

दिल्ली में पानी के अपने स्रोत भी थे- कुएं, बावड़ी, तालाब, झील, यमुना आदि। अब कुएं, बावड़ी, तालाब, झील बर्बाद हो गए। कहीं-कहीं इनके नामोनिशान, अवशेष, चिन्ह अब भी शेष है। नाम मात्र को कोई-कोई कुआं कहीं बचा भी है तो उसे ढक दिया है, बंद कर दिया है, छुपा दिया है, उस पर कब्जा कर लिया है। इनके स्थान पर हैंडपम्प, नलकूप, बोरिंग, नल का प्रयोग हो रहा है। अब तो सबमर्सिबलों का जमाना है। दबकर, छुपकर धरती को खाली करो। यमुना के साथ-साथ गंगा का पानी भी दिल्ली को मिल रहा है। बड़े-बड़े पाइपों के द्वारा यह पानी दिल्ली पहुंचाया जाता है। दिल्ली जैसी राजनैतिक सशक्त नगरी को पानी से वंचित रखने की हिम्मत किसमें है? कौन यह साहस दिखा सकता है दिल्ली का पानी रोके। जहां से दिल्ली के लिए पानी लाया जाता है उन किनारों पर बसे गांव जाए भाड़ में, उनके पानी की चिंता किसको है? उनको चाहे एक बूंद पानी न मिले, दिल्ली को पानी चाहिए क्योंकि आज के राजा राजघराने, सत्ता, सम्पत्ति, सम्पदा, धन, अधिकार के मालिक, बड़े आदमी, अधिकारी, नेता, शक्तिशाली, भुजाबल वाले तो दिल्ली में बैठे हैं। लोकतंत्र में भी नागरिक, आम नागरिक वह भी गांव में रहने वाला बेचारा ही है, गांव वाले की ताकत मात्र कुछ क्षण की दिखती है, जिस दिन मत (वोट) डाला जाता है, वह भी किसी न किसी रूप में प्रभावित हो जाती है इसलिए लोकतंत्र में भी आम नागरिक के अधिकार कब, कितने, कहां कैसे है? भगवान जाने। दिल्ली को पानी चाहिए कहीं से भी लाया जाए।

अब हिमाचल से भी दिल्ली को पानी मिले इसके प्रयास लम्बे समय से चल रहे हैं। दिल्ली सरकार रेणुका बांध से एक अरब 24 करोड़ लीटर पानी चाहती है। दिल्ली को 3 अरब 60 करोड़ लीटर पानी की प्रतिदिन की जरूरत है। अभी दिल्ली को 2 अरब 90 करोड़ लीटर पानी की ही आपूर्ति विभिन्न स्रोतों से हो पाती है।

आज दिल्ली में पानी का प्रयोग भी बड़े अटपटे ढंग से होता है। पांच सितारा होटल, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, संसद भवन, प्रधानमंत्री, मंत्री, सांसद, विधायक निवास, प्रशासनिक अधिकारी (मुख्य सचिव से लेकर नीचे तक)

सतपुलाः यमुना की सहायक नदियों पर दिल्ली में बने पुल।

दूतावास, तरणताल, सचिवालय, सार्वजनिक सुविधाएं, शौचालय आदि, कार धुलाई, कारखाने, फैक्टरियां, उद्योग-धन्धे, पार्क-बाग, टूटे पाईप, नल आदि की अव्यवस्था, बढ़ती आबादी, प्रापर्टी डीलर, बदली जीवन शैली आदि के कारण पानी का खुला उपयोग, बेझिझक प्रयोग किया जाता है। पीने को कुछ को पानी भी न मिले मगर कुछ को पानी खुला, बेझिझक उपभोग, दुरुपयोग करने की छूट सी प्राप्त है। ऐसे उद्योग धंधे लगाए, बढ़ाए जा रहे हैं जिनमें पानी की भारी बर्बादी या उपभोग किया जाता है।

दिल्ली में पानी के बंटवारे में भी बड़ी भारी असमानता है। लुटियन की दिल्ली को 30 करोड़ लीटर पानी मिलेगा मगर महरौली को 4 करोड़ लीटर देने में भी कठिनाई आती है। रामनगर जैसे इलाके में पिछले लगभग एक दशक से पानी आता ही नहीं है। नलों में एक दशक से सूखा (अकाल) पड़ा है। लोग बाहर से पानी लाते हैं। सुबह सबेरे से ही बूढ़े से लगाकर बच्चे तक पानी के जुगाड़ में लग जाते है। पानी की लाईन में बूढ़े-बच्चे-महिलाएं घंटों खड़ी रहती है। यह इलाका कनाट प्लेस से थोड़ी दूरी पर ही है फिर भी यहां पानी के जुगाड़ के लिए लोग तरसते, तड़पते, लड़ते-झगड़ते, भागते-दौड़ते चिल्लाते नजर आएंगे। "यह मेरी दिल्ली, मेरी जान, मेरी पहचान" सरकारी नारे को ठेंगा दिखाती दिल्ली की तस्वीर है प्यारे।

दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र में भी पानी की बहुत किल्लत है। पीने का पानी नजफगढ़ नाले के कारण पूरी तरह प्रदूषित हो गया है। इस नाले के आसपास के पूरे क्षेत्र का पानी पीने के लायक नहीं बचा है। सरकार ने स्थान-स्थान पर सूचना लगा रखी है, बोर्ड लगवा रखे हैं कि भूजल, ट्यूबवेल का पानी पीने लायक नहीं है। यह पानी पीने के लिए सुरक्षित नहीं है, इसे पीना मना है। लोगों ने सरकारी नल लगवाए हैं मगर उसमें पर्याप्त पानी नहीं है, उनकी दशा भी मनमौजी की तरह है। जब चाहे पानी आए, जब चाहे नहीं। क्षेत्र के लोग पानी के लिए अनेक बार दूर-दूर तक पानी लेने जाते हैं। नजफगढ़ नाला जो कभी इस क्षेत्र को जीवन देने वाला था, आज समस्या बनकर बह रहा है। इन गांवों में तो और भी दिक्कत रहती है- हसनपुर, पंडवाला कलां, पंडवाला खुर्द, खड़खरी जटमल, खेड़ा डाबर, रावता, भूमन हेड़ा, झुलझरी, कादीपुर, छावला, नंगली डेरी आदि।

दिल्ली में पानी की याद दिलवाने के लिए स्थानों के नाम लाल कुंआ, धौला कुंआ हौजखास, झील, भूली-भटियारी की प्याऊ, मनिहारी प्याऊ, दरियागंज आदि को लोग जानते हैं। रिक्शा, बस वाले इनके नाम पुकार कर सवारियों को अपनी ओर बुलाते है। लगता है कि वे याद दिलवा रहे हो कि दिल्ली वालों चेतो कभी तुम पानीदार थे। अब तुम्हें क्या हो गया है? पानी की खबर ही लेना छोड़ दिया। अब पानी के बारे में केवल समाचार सुनकर संतोष कर लेते हो।

महालेखाकार ने 2008 में दिल्ली जल बोर्ड की समीक्षा करते हुए टिप्पणी की दिल्ली में 40% के लगभग पानी व्यर्थ, बेकार बह जाता है। इसमें सच्चाई इसलिए लगती है कि बगैर प्रयास के ही आपको दिल्ली में बेकार बहते पानी का सामना कहीं भी कभी भी हो जाता है। प्रयास करके देखने में तो आप भौचक्के रह जाएंगें। यह दिल्ली है जहां से पूरे देश का शासन, प्रशासन, व्यवस्था जैसी भी है, चलती है। मगर दिल्ली, अपनी दिल्ली, दिलवालों की दिल्ली का बुरा हाल है, कभी इसके दर्द को अंदर झांककर तो देखो। लुटियन की दिल्ली ही दिल्ली नहीं है इससे बड़ी और आम दिल्ली ही असली दिल्ली है।

एक और पानी की यह बर्बादी दूसरी ओर जल बोर्ड, प्रशासन कहता है, आरोप लगाता है कि बर्बादी से ज्यादा चोरी की समस्या है। अवैध कालोनियों में भारी मात्रा में पानी की चोरी होती है। इससे पानी का अभाव पड़ता है।

आश्चर्य लगता है यह सब सुनकर। यह अभाव आम आदमी को ही क्यों प्रभावित करता है? तरणताल, पांच सितारा, लुटियन की दिल्ली में तो पार्क सिंचाई, कार धुलाई के लिए भी पानी की कमी नहीं है। इस दिल्ली के हिस्से को तो खूब मनचाहा, जितना चाहिए पानी मिलता है। मगर आम दिल्ली, लोगों की दिल्ली, लोक दिल्ली प्यासी है, उसकी प्यास कब, कैसे मिटेगी? लुटियन की दिल्ली अपनी जीवनशैली बदले तो सम्भव है कि शेष दिल्ली चैन की सांस ले सके वैसे हमें भी अपनी जीवनशैली पर कुछ मर्यादा, बदलाव करने की जरूरत है।

इन सबके बावजूद यमुना का दिल्ली के जीवन में अपना महत्व रहा है। यमुना के किनारे खेती, बाग- बगीचे, बगीची, बागवानी, फुलवाड़ी, प्लेज तो होती ही थी जिनके अन्न, सब्जी, फल-फूलों, छाया का प्रयोग खूब किया जाता था। यमुना के किनारे अखाड़े एवं तैराक संघ होते थे। अखाड़ों में कुश्ती के लिए पहलवान तैयार होते थे।

तैराकी संघ में बच्चों-बड़ों को तैरना सिखाया जाता था। अखाड़े पहलवानों के शरणी स्थल थे। यहां उन्हें कुश्ती के नये-नये दावं-पेंच सीखाए जाते थे, उनकी खुराक, मालिश आदि का प्रबंध यहां से भी हो जाता था। यमुना के अखाड़ों ने अनेक नामी-गिरामी पहलवान देश को दिए हैं। तैराक संघों ने भी बड़ी संख्या में लोगों को तैरना सीखाया। मेले, उत्सव, त्यौहारों, पर्वो के अवसरों पर पहलवान अपने दांव-पेंच, कुश्ती दिखाते थे। तैराक संघ लोगों को डूबने से बचाने के लिए घाटो, किनारों पर इन अवसरों पर विशेष ध्यान रखते थे। यह ध्यान रखा जाता था कि कोई भी व्यक्ति स्नानादि के समय नदी में डूब या बह न जाए। उस्ताद लोग अपने पट्ठो की, शिष्यों की जिम्मेदारी बांट देते थे।

आज भी दिल्ली के कुछ पुराने मल्लाह है जो लोगों को डूबने से बचाने के लिए अपनी नाव लेकर बाढ़ के समय सतर्क एवं तत्पर रहते हैं। वे यह काम स्वेच्छा एवं प्रसन्नता से करते है। अपना कर्त्तव्य मानकर करते है।

यमुना के किनारे लगने वाले मेले, प्रदर्शनी, उत्सव, स्नान घाट यमुना किनारों की रौनक बढ़ा देते थे। बड़ी संख्या में लोग स्नान के लिए आते थे। साइकिल, बैलगाड़ी, तांगा, ऊंट गाड़ी, रिक्शा, बस, फोरसीटर (यह मोटर साइकिल पर

बनाया जाता था, इसे फटफट भी कहते थे), जीप के साथ-साथ बड़ी संख्या में लोग पैदल आते थे। यह अवसर गाने-बजाने नाचने, सामान खरीदने, अपने कर्त्तव्य दिखाने, मौज-मेला मनाने, खेल देखने-दिखाने, दंगल करने-करवाने, लोगों से मिलने-जुलने, पूजा-पाठ, नई-नई बात जानने के भी काम आते थे। ऐसे अवसरों पर प्रदर्शनियां भी लगाई जाती थी, कुम्हार, लुहार, बढ़ई, मोची, दस्तकार, कारीगर अपने-अपने उत्पादों, सामान के साथ आते थे। एक अच्छा-खासा बाजार लग जाता था। लोग अपनी आवश्यकताओं की वस्तु की खरीद फरोख्त करते। औरतें झुण्ड बना-बनाकर गीत गाती, यमुना मैया की जय बोलते, परिवार के साथ बच्चे-बड़े-बूढ़े सभी स्नान के लिए यमुना की ओर उत्साह, प्रेम, मस्ती में झूमते बढ़ते नज़र आते थे। घाटों पर जगह नहीं मिलती तो लोग नदी के दोनों किनारों पर दूर-दूर तक अपना स्थान तलाशते तथा उचित स्थान पाने पर वही अपना डेरा डाल देते थे। भोजन सामग्री अधिकतर लोग, परिवार साथ लाते थे। स्नान के बाद नदी किनारे ही भोजन का आनन्द उठाया जाता। जो भोजन सामग्री नहीं लाते वे किनारे लगी दुकानों से अपना नाश्ता, भोजन की सामग्री खरीदते थे।

नदियों पर मेले।

गोलगप्पे, चाट-पकौड़ी, गर्मागर्म कचौरी-समोसे, जलेबी, दूध, दही, लस्सी, हलवा-नागौरी, बेड़मी, पूरी, छोले-भठूरे, छोले-कुल्चे, पराठे, फलों की चाट, आलू की टिक्की, भूने आलू, दौलत की चाट (यह दूध के झाग से बनी विशेष नजाकत की वस्तु होती थी)। बच्चों के लिए लट्टू, गुब्बारे, चक्करियां, कूदने वाली रस्सी, फिरकियां, बांसुरी, गले में पहनने वाली तरह-तरह की मालाएं, मिट्टी के तरह-तरह के खिलौने, चक्की-चूल्हा, बर्तन-भांडे, पानी पीने की तुतई (विशेष ढंग से बनी हुई), खाने में मटके वाली कुल्फी, आईसक्रीम, बुढ़िया के बाल (इनको चीनी से एक गोल चक्कर में घूमा-घूमाकर बनाया जाता था) आज भी यह खूब चलते हैं, (बच्चे चाव से खाते हैं) आदि की दुकाने, खोमचे, रेहड़ियां, टोकरियों में सजी-संवरी वस्तुओं को खरीदने का अपना ही आनन्द, मजा, लुत्फ आता था। कम पैसे में भी अपार खुशी का अहसास होता था।

बच्चे लोग बारह मन की धोबन को देखने के लिए बाइस्कोप देखते, तो कहीं श्रवण कुमार, हरिश्चन्द्र, प्रहलाद का नाटक चलता, तो कहीं स्वर्ग-नरक की झाकियां लोगों को डराती, धमकाती, सबक देती नजर आती। कहीं फिल्मीगानों पर नाचते-कूदते कदम (महिला वेश में पुरूष) नजर आते। कहीं मेहरबान, कद्रदान, जनाब हमारा जादू जरूर देखिए की आवाज, तो कहीं धड़ से सर अलग करके दिखाने वाले, शरीर को जादू से दो टुकड़े करने वाले करतब दिखाते, तो मौत के कुएं में छलांग लगाने को तैयार व्यक्ति ऊंचाई पर खड़ा नजर आता, तो मौत के कुंए में मोटर साइकिल चलाने का करतब दिल की धड़कन ही रोक देता था। शरीर पर आग लगाकर ऊंचाई से कूदते देखकर शरीर में झनझनाहट पैदा कर देता था। इन मेलों की अपनी ही रौनक, जोश, उत्साह होता था। लोग मेले में जाने के लिए कई दिन पहले से तैयारी करते थे। हर तरह की जरूरत का सामान मेलों में मिलता था। रंगदार-चटकदार, नये-नये कपड़े, गहने पहने लोग मेलों में भागीदारी करते।

यमुना दिल्ली और आसपास के समाज में जीवन का प्रवाह, उत्साह, जोश, आनन्द भरती थी। दिल्ली का जीवन यमुना के आसपास और निखार लेता था। यमुना पर सबका हक, अधिकार था। यमुना सबका ख्याल, ध्यान रखती थी। सबके लिए यमुना के द्वार खुले थे। यमुना घाटों, मंदिरों में पूजा अर्चना अन्न क्षेत्र होते थे। यमुना के किनारे धार्मिक स्थल, आश्रम, गौशाला, धर्मशाला, अखाड़े आदि में जीवन रहता ही नहीं था, यहां से जीवन बनता एवं चलता

भी था, जीवन को दिशा मिलती थी, जीवन का निर्माण होता था। यमुना की अहम भूमिका दिल्ली के जीवन पर रही है। अपने किनारे बसे गांवों, कस्बों, नगरों को यमुना खुशहाल, सुख, समृद्ध, सम्पन्न बनाती रही है।

यमुना सुरक्षा का कार्य भी करती थी। नदी के कारण सुरक्षा का भाव भी मन में रहता था। नदी पार करना बहुत आसान नहीं होता था। यमुना के किनारे बने लालकिला की खाई में यमुना जल भरा रहता था। एक ओर स्वयं यमुना तथा अन्य तीन ओर खाई में यमुना जल भरा रहता था। वातावरण पर भी सदानीरा नदी का प्रभाव पड़ता था। इस तरह नदी सुरक्षा, हमले से बचाव करती थी। हरियाली बढ़ाती थी, वन क्षेत्र विकसित करती थी, धरती का पेट भरती थी, लोगो के पेट के लिए अन्न, फल, सब्जियां देती थी, नौका आदि से लोगों को रोजगार मिलता था। नदी के किनारे पण्डों, मल्लाहों आदि का कार्य फलता फूलता था। नदी का क्षेत्र गर्मी से राहत प्रदान करता था। सैर सपाटे, घूमने के लिए भी नदी का प्रयोग होता था। नदी किनारे ही शमशान, तर्पण आदि का कार्य भी सम्पन्न होता था। नदी ही जीवन है का अहसास बार-बार होता था। नदी संस्कृति के आसपास ही जीवन फला-फूला विकसित हुआ, आगे बढ़ा। नदी मात्र जल का स्रोत नहीं आस्था, प्रेरणा, जीवन की धारा रही। नदी को मां कहकर पुकारा गया।

वर्षा ऋतु में जब अपने किनारों को छोड़कर, तोड़कर यमुना फैलती थी तो आसपास में दूर-दूर तक पानी फैल जाता था, किसानों के खेतों में नई जान आ जाती थी। आने वाली फसल के लिए किसान नाच उठता था। कुंए, तालाब, बावड़ी, झील, गड्ढों में पानी भर जाता था। धरती के गर्भ में खादर के माध्यम से खूब पानी भर जाता था जिससे धरती का पेट भर जाता था, भूजल का स्रोत बढ़ जाता था। आसपास के बरसाती नालों के माध्यम से यमुना में पानी आता था तथा यमुना में बाढ़ आने पर इन्हीं नदी, नालों के माध्यम से पानी दूर-दूर तक ढलान या झीलों तक पहुंच जाता था जिसके कारण वहां भी हरियाली, खेती, पशु-पक्षी को सुविधा मिल जाती थी। यमुना में पानी कम होने पर धीरे-धीरे इन्हीं नालों द्वारा कुछ पानी यमुना में वापसी आता था जो नदी का जल प्रवाह बनाए रखने में मदद करता था। नजफगढ़ नाला, साबी नदी इस कार्य को विशेषकर करते थे। नजफगढ़ नाला नजफगढ़ झील से जुड़ा था। यह नाला उस समय साफ पानी का था, आज की तरह गंदगी भरा नहीं।

नदी खादर और बाढ़ क्षेत्र पर कब्जा

नदी क्षेत्र खादर बाढ़ क्षेत्र	पूर्वी किनारा	पश्चिमी किनारा
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सीमा से वजीराबाद बैराज	सोनिया विहार, खूजरीखास सी आर पी एफ कैम्प, दिल्ली जल बोर्ड वर्क्स	जे. जे. कालोनी, वाटर वर्क्स
वजीराबाद बैराज से शाहदरा पुल	220 के.वी. ई एस एस पावर वितरण स्टेशन	मैटकाफ हाउस, मजनूं का टीला, सिग्नेचर पुल (प्रस्तावित)
शाहदरा पुल से आई.टी.ओ.पुल (यमुना बैराज)	शास्त्री पार्क मेट्रो स्टेशन एवं मुख्यालय, आई. टी. पार्क, जे.जे. कालोनियां (कुछ हटाई गई है) गीता कालोनी पुल, नया रेलवे पुल (निर्माणाधीन) हाईवे (निर्माणाधीन)	जे.जे. कालोनियां (कुछ हटाई गई) विद्युत शवदाह गृह, समाधियां (विजयघाट, शांतिवन, शक्तिस्थल, राजघाट, किसान घाट,) आई.पी. पावर स्टेशन एवं हाउस, यमुना वेलोड्रम, आई.जी. इंडोर स्टेडियम, दिल्ली सरकार सचिवालय
आई.टी.ओ. पुल (यमुना बैराज) से निजामुद्दीन पुल	यमुना मेट्रो स्टेशन, मेट्रो पुल एवं बांध, अक्षरधाम, कामनवेल्थ खेल काम्पलेक्स, जे.जे. कालोनियां (कुछ हटाई गई है)	प्रगति पावर स्टेशन पेट्रोल पम्प, जे.जे. कालोनियां (कुछ हटाई गई है)
निजामुद्दीन पुल से डी.एन.डी.	जे.जे. कालोनियां (कुछ हटाई गई है) मयूर प्लेस सीटी सेंटर तक डी.एन.डी. का विस्तार	लैण्डफिल, विद्युत शवदाहगृह, ग्लोबल गांव
डी.एन.डी. से ओखला बैराज		जे.जे. एवं अन्य कालोनियां, बाटला हाऊस एवं विस्तार, डिफेन्स सर्विसज सेलिंग क्लब, कालिन्दी कुंज बाईपास रोड, अब्दुल फज़ल एन्कलेव
ओखला बैराज के दक्षिण में	एमेटी विश्वविद्यालय उ. प्र.	इंडियन आईल बोटलींग प्लांट, पुनर्वास कालोनियां (मदनपुर खादर)

दिल्ली में यमुना का खादर विशेष है, यह पर्याप्त मोटाई लिए हुए है। इसकी मोटाई, गहराई 70 मीटर तक है। यह मोटा, बड़ा, गहरा होने के साथ-साथ लचीला भी है इसकी रेती स्पंज की तरह लचीली है जिसमें बड़ी मात्रा में पानी भरता है, रुकता है। यह शुद्ध जल का बड़ा भंडार है। आमतौर पर इतना बड़ा लचीला खादर नदियों पर नहीं मिलता। आज भी दिल्ली की प्यास बुझाने में इसका महत्वपूर्ण प्रयोग किया जा रहा है, बड़ी मात्रा में ट्यूबवेलों के माध्यम से पानी निकाला जा रहा है। इतनी सब बर्बादी, लापरवाही, गड़बड़, कब्जों के बावजूद भी यमुना तथा इसके खादर का पानी ही यमुना मैया की कृपा से दिल्ली की प्यास बुझाने में काम आता है।

नदी का खादर, बाढ़ क्षेत्र नदी को सतत, सुगम बहने, वनस्पति को बढ़ाने, भूतल के पानी को भरने (रिचार्ज), बाढ़ को संभालने आदि के काम आता है। जब यह सहज, सरलता से नदी के साथ मुक्त रहता है तो नदी का आस-पड़ोस, पर्यावरण, वातावरण हराभरा, पानीदार, नदी को मजबूत करने वाला होता है। जब इस पर वैध या अवैध कब्जे होने लगते है, निर्माण कार्य प्रारम्भ हो जाते हैं। सड़क, पुल, भवन, काम्पलेक्स बनने लगते हैं तो नदी पर संकट आ जाता है और उसकी दशा बिगड़ने लगती है। नदी का सिस्टम गड़बड़ा जाता है, उसका दम घुटने लगता है, वह मरने लगती है। दिल्ली में जोन 'ओ' और जोन 'पी'

नदी को जहर से भरता औद्योगिक रसायन, कचरा। श्रद्धालु इसी जल में नहाने को अभिशप्त हैं।

दो बांधों, पुश्तों के मध्य नदी के पूर्व-पश्चिम में यमुना का 97 वर्ग कि.मी. का क्षेत्र माना जा रहा है जिसमें से 16 वर्ग कि.मी. पानी वाला है शेष 81 वर्ग कि.मी. खादर, नदी का बाढ़ क्षेत्र है। समय के साथ-साथ इसको बदला जा रहा है। इसमें निर्माण किया जा रहा हैं इसका प्रयोग बदला जा रहा है।

यमुना के खादर में जल संचयन (भंडारण) की अद्‌भुत क्षमता है। इस खादर को सुरक्षित किया जाए, रखा जाए तो आज भी दिल्ली के आसपास बड़ा पानी का भंडारण सुरक्षित किया जा सकता है। वर्षा जल का संरक्षण बड़ी मात्रा में यमुना खादर में किया जा सकता है। इसके लिए आगे के निर्माणों पर तो रोक लगानी ही होगी साथ ही यथा संभव कब्ज़ों को भी हटाया जाए। अपनी दशा और दिशा, नीति और नियत में बदलाव लाया जाए तभी यह संभव हो सकता है। हमें अपनी जीवन शैली, पद्धति में भी बदलाव लाना होगा। पहले यमुना जल याचमन से दिन शुरू होता था तथा दीप प्रज्जवलन से दिन को पूर्णता मिलती थी।

बाढ़ का प्रकोप/भय

दिल्ली में इससे पूर्व अनेक बार यमुना में बाढ़ आई है। दिल्ली में खतरे का निशान 204.83 मीटर पर है। इससे ऊपर बाढ़ शुरू हो जाती है। पिछले 35-40 वर्षों में यमुना में लगभग 25 बार ऐसी बाढ़ आई है, जिसमें उसने इस खतरे के निशान को पार किया है। 1924 से 1995 के मध्य छः बार भयंकर बाढ़ आई 1924, 1947, 1976, 1978, 1988, और 1995 में। इसमें यमुना खतरे के निशान से एक मीटर और इससे भी ज्यादा ऊपर पहुंची, 6 सितम्बर 1978 को खतरे के निशान से पानी 2.66 मीटर ऊपर पहुंचा। 27 सितम्बर 1988 को 206.92 मीटर तक पानी पहुंचा। उत्तर दिल्ली और जमुनापार में कुछ कालोनियां 1978 के बाढ़ के स्तर से 3 से 4 मीटर नीचे हैं इनको कभी भी भयंकर खतरे का सामना करना पड़ सकता है। पुश्ता एवं बांध के टूटने का खतरा भी कभी भी बना रहता है। पहले की बाढ़ों में इसके कई अनुभव आए भी हैं। दिल्ली को केवल दिल्ली की वर्षा के समय ही नहीं, ऊपर आई वर्षा के समय भी खतरा बना रहता है। कई बार हथिनी कुंड, ताजेवाला बैराज से छोड़े गए पानी से भी दिल्ली को बाढ़ का सामना करना पड़ा है। मॉडल टाउन, मुखर्जीनगर, शास्त्री पार्क, सोनिया विहार, सी.आर.पी.एफ., डी.जे.बी. वर्क्स, गीता कालोनी आदि में भी बाढ़ का पानी आ चुका है।

सितम्बर 2009 में जब यह सब लिखा जा रहा है तो दिल्ली में यमुना में बाढ़ की चेतावनी घोषित की जा रही है। संभावना है कि पानी खतरे के निशान से ऊपर 205.05 मीटर तक पहुंच जाएगा। खतरे के निशान से लगभग सवा मीटर ऊपर होने पर यह घबराहट है मगर इतिहास एवं पुराने आंकड़े बताते हैं कि यमुना में इससे ज्यादा पानी कई बार आया है। सरकार ने 13 नाव एवं 42 तैराकों को सुरक्षा के लिए यमुना में तैनात किया हैं जबकि इस बार दिल्ली में सामान्य से कुछ कम ही वर्षा हुई है। हरियाणा ने 4 लाख क्यूसेक पानी ऊपर से छोड़ा है। जब भी वहां से पानी बड़ी मात्रा में छोड़ा जाता है, दिल्ली में बाढ़ का खतरा हो जाता है। सरकार आश्वासन देती है कि सुरक्षा के सभी इंतजाम कर लिए गए हैं मगर लोगों तक वे पहुंच नहीं पाते है। पिछले वर्ष यमुना में पानी 206 मीटर तक पहुंचा था। हरियाणा सरकार जब हथिनी कुण्ड से पानी छोड़ती है तो उसे दिल्ली पहुंचने में 36 से 72 घंटे लग जाते हैं। नीचे भाग में तथा यमुना खादर बाढ़ क्षेत्र में बसे लोगों को कहा जा रहा है कि वे सुरक्षित स्थान पर जाएं। उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए सरकार व्यवस्था कर रही है। जीवन सुरक्षा जैकेट पहनकर नावों में कर्मचारी, तैराक नदी पर घूम रहे हैं। इन सबके बावजूद स्थायी व्यवस्था पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

भूकम्प का प्रकोपः

दिल्ली भूकम्प के सीस्मिक जोन चार में आता है। इसलिए भूकम्प का खतरा भी दिल्ली के सिर पर मंडराता रहता है। यमुना का क्षेत्र इस खतरे में ज्यादा आता है। यमुना के क्षेत्र में भूकम्प की ज्यादा आशंका है।

दिल्ली के लिए नहर (नाला) नं. आठ एवं दो से जो पानी वजीराबाद लाया जाता है उसी के पास गंदे पानी-कचरे के लिए नाला नं. छः बहता है जो समानांतर बहता है। कई स्थानों पर नाला टूटा-फूटा होने के कारण, सही मरम्मत के अभाव में, नाला ऊंचाई पर होने के कारण इसका गंदा पानी पीने वाले पानी में मिल जाता है जिससे जन स्वास्थ्य को बड़ा खतरा बन सकता है। इस नाले की स्थिति व्यवस्था, देखभाल अच्छी न होने के कारण खतरा और भी ज्यादा बढ़ा हुआ है। जनता के स्वास्थ्य के साथ यह कैसा खिलवाड़ है?

न्यायालय भी यमुना के साथ खिलवाड़ कर रहा है ऐसा लगता है। कभी उसके फैसले देखकर लगता है कि व गम्भीर एवं समझदारी के फैसले दे रहा है तो

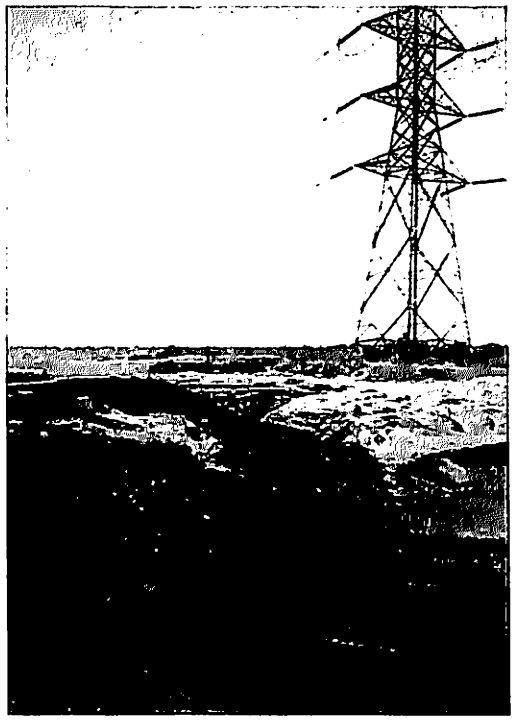

दिल्ली के बिजली घर की राख यमुना में।

कभी उसके फैसले चिंता और चुनौती को बढ़ाते नज़र आते हैं। राष्ट्रमंडल खेल, मैट्रो आदि के समय न्यायालय में जो जनहित याचिका लगाई गई, उसे सुनने की भी फुर्सत न्यायालय को नहीं मिली। कभी याचिका स्वीकार भी हुई तो उसकी प्रक्रिया इतनी लम्बी, ऊबाऊ, खर्चीली, तंत्र में फंसी लगती है कि तब तक निर्माण कार्य जारी रहता है और बाद में कहा जाता है कि जनता का इतना पैसा अमुक प्रोजेक्ट कार्य में अब तक लग गया कि अब वापिस जाना ठीक नहीं है। न्यायालय के फैसले, सरकारों के अपने फैसले जो पहले किए जा चुके हैं इन्हें भी लागू नहीं किया जा रहा है।

दिल्ली-राजस्थान-हरियाणा-हिमाचल-उत्तर प्रदेश सरकार के पांचों मुख्यमंत्रियों ने यमुना में 10 क्यूसेक पानी छोड़ने का जो फैसला 12 मई 1994 को किया था उसको अभी तक लागू नहीं किया गया है। सोचा गया था कि कम से कम कुछ बहाव यमुना में जरूर बनाकर रखा जा सकेगा। यह 1994 में फैसला हुआ मगर अभी तक लागू नहीं किया गया।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद इस संबंध में हाई पावर कमेटी (एचपीसी) जनवरी 1998 में योजना आयोग के (पर्यावरण) सदस्य की अध्यक्षता में अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक कदम तय करने के लिए जिससे यमुना में 10 क्यूबिक मीटर प्रति सेकण्ड का बहाव जारी रह सके, बनाई गई। संबंधित राज्यों को इस प्रकार से ताजा पानी अपने हिस्से का छोड़ना होगा, जिससे 10 क्यूसेक का स्तर बना रह सकें, हरियाणा 56.7%, उ.प्र. 28.7%, दिल्ली 4.6%, राजस्थान 5.2% हिमाचल 4.8%। इसके बावजूद अभी तक यह निर्णय लागू नहीं किया जा सका है। अवैध कब्जे, नये-नये निर्माणों का मामला तो बढ़ता ही जा रहा है।

1995 में अपर यमुना नदी बोर्ड (यू वाई आर बी) का गठन जल संसाधन मंत्रालय भारत सरकार ने किया। इसके साथ ही जल संसाधन मंत्री, भारत सरकार एवं संबंधित राज्यों के मुख्यमंत्रियों की एक अपर यमुना रिव्यू कमेटी (यू वाई आर सी) बनाई गई जिसे फैसले को लागू करने के लिए, नदी के बहाव, उचित विकास एवं प्रबंधन के लिए दिशा निर्देश जारी करने थे। संसदीय स्टंडिंग कमेटी ने भी सरकार एवं समुदाय के स्तर पर नदी को साफ सुथरा रखने के सुझाव दिए। सभी का नतीजा क्या निकला? कुछ समितियां भी बनाई गई उनको विशेष अधिकार भी दिए गए। उनमें से कुछ इस प्रकार है-

1. पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा 1998 में यमुना के न्यूनतम बहाव के मुद्दे पर अपनी राय देने के लिए जी. थीमैयाह, सदस्य, योजना आयोग की अध्यक्षता में एक हाई पावरड कमेटी का गठन किया गया। इस कमेटी से यमुना के न्यूनतम बहाव की आवश्यकता के अनुसार नदी पानी की गुणवता बनाए रखने के लिए तथा न्यूनतम बहाव के लिए अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक उपाय सुझाने की अपेक्षा रखी गई थी।

2. दिल्ली ट्रांस यमुना क्षेत्र में प्रदूषण की स्थिति जानने के लिए पूर्व केबिनट सचिव पी.के. कौल की अध्यक्षता में एक कमेटी जनवरी 1998 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा बनाई गई।

3. हाई पावरड कमेटी (एच.पी.सी) बैजल कमेटी अगस्त 2004 सर्वोच्च न्यायालय द्वारा श्री अनील बैजल, नगर विकास की अध्यक्षता में बनाई गई। नदी सफाई के लिए एक्शन प्लान बनाने हेतु।

4. यमुना रिमूवल ऑफ इन्करोचमेंटस कमेटी- नवम्बर 2005 दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा निवर्तमान न्यायाधीश उषा मेहता के नेतृत्व में, सर्वोच्च न्यायालय के मार्च 2003 के निर्देश के अनुसार यमुना किनारों से अवैध कब्जे हटाने हेतु बनाई गई।

5. एपेक्स कमेटी- दिसम्बर 2005

अपनी जिम्मेवारी न निभाने एवं लापरवाही बरतने के आरोप में दिल्ली उच्च न्यायालय ने 2008 में दिल्ली जल बोर्ड के एक उच्च अधिकारी को दो सप्ताह की जेल की सजा दी तथा अन्य विभागों के तीन अधिकारियों को बीस-बीस हजार रुपये की सजा सुनाई मगर फिर वही ढाक के तीन पात। यमुना का प्रदूषण जारी है।

यमुना तट पर बनी फूलघड़ीः न फूल बचे, न घड़ी, बस बचा है सीवर

यमुना एक्शन प्लान (वाई ए पी) 1993 से शुरू हुआ। इसका पहला चरण 1993 से 2003 तक चला। करोड़ों रूपये का खर्चा किया गया। 2004 से दूसरा चरण प्रारम्भ है इसमें भी करोड़ों रूपये खर्च किए जा रहे हैं। पहले चरण में छः सौ करोड़ से ज्यादा खर्च किया गया । इस प्लान में जापान का, जापान बैंक ऑफ इंटरनेशनल कॉआपरेशन का सहयोग भी मिल रहा है। एक्शन प्लान में वादा किया था कि 2010 तक यमुना का 90% पानी साफ कर दिया जाएगा। राष्ट्रीय नदी संरक्षण निदेशालय (एन.आर.सी.डी.) जैसे कई संगठन यमुना जैसी नदियों को साफ-सुथरा बनाने के लिए बनाए गए हैं। कई उच्च

शक्ति प्राप्त समितियों का गठन किया गया है, कई संस्थान, बोर्ड बनाए गए हैं मगर यमुना दिल्ली में वैसी ही बनी हुई है। उसकी दशा और दिशा कुछ ज्यादा ही खराब एवं कमजोर हुई है। पैसा, इतनी बड़ी रकम खर्च हो रही है मगर वह यमुना को बचा नहीं पा रही है। हमारे नियम और नीतियों में कहीं पर बड़ा दोष है। 2010 के कगार पर हम पहुंचने वाले हैं। यमुना का प्रदूषण, गंदगी वैसे ही जारी है।

यमुना एक्शन प्लान में हरियाणा के बारह, उत्तर प्रदेश के आठ शहर और दिल्ली शामिल है। पर्यावरण, वन एवं जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार के साथ-साथ इनके द्वारा गठित बोर्ड, समितियां आदि भी बनाई गई है। दिल्ली सरकार, हरियाणा, उत्तर प्रदेश सरकार भी अपने ढंग से प्रयास कर रही है मगर *"सौ दिन चले ढ़ाई कोस"* यहां तो कहा जाएगा *"15 वर्ष में चले नहीं एक भी कि.मी."।*

यमुना एक्शन प्लान में बड़े-बड़े सपने भी देखे और दिखाए है। इनको धरती पर कैसे उतारा जाएगा यह समझ से परे है। 185 हेक्टेयर में बॉयो-डायवेरसीटी पार्क बनाने की योजना, ओखला की ओर पक्षी विहार बनाने की योजना, विद्युत शवदाह गृह, एलपीजी गैस शवदाह गृह बनाए जा रहे हैं। यमुना में गंदे नालों को न डालने की योजना, यमुना क्षेत्र को साफ-सुथरा, सुंदर, प्रदूषण मुक्त बनाने की योजना, जल संशोधन एवं संरक्षण की योजना, इन सबके बावजूद यमुना मरी पड़ी है और उसकी दशा दिनों दिन और अधिक बिगड़ती जा रही है या बिगाड़ी जा रही है। योजना-योजना तक ही सीमित रही है। जितना खर्चा होता है काम वैसा नहीं हो पा रहा है। कहा जा सकता है कि ज्यों-ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता ही गया।

जल संशोधन यंत्र लगे भी है तो काम नहीं कर रहे है, खराब पड़े है। उनमें खराबी है या प्रबन्धन व्यवस्था में खराबी है। सब कुछ लुटाकर होश में आए तो क्या हुआ? वाई.ए.पी. यमुना एक्शन प्लान है या यमुना एन्टी प्लान है यह समझ नहीं आ रहा है। इनके 15 वर्ष का काम तथा करोड़ों का भारी खर्च देखे तो धरती पर सामने खुली आंख से कुछ भी नज़र नहीं आ रहा है। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में यमुना सफाई के कई कार्यक्रम हुए, अखबारों, दूरदर्शन, रेडियों पर समाचार एवं फोटो छपे। यमुना की कितनी सफाई हुई, कह नहीं सकते मगर दिल्ली को सुंदर शहर का प्रमाण पत्र विदेश से मिल

जाता है। दिल्ली में तो यमुना को देखकर कोई भी बता देगा कि यह नदी नहीं हो सकती, यह तो गंदा नाला है। गर्मी में तो कोई गलती से मोटर वोट में बैठकर यमुना में कुछ दूरी चल ही नहीं सकता, बदबू के मारे उसका बुरा हाल हो जाएगा। उन दिनों यमुना किनारे खड़ा होना मुश्किल हो जाता है। अब भी कृपा प्रकृति की है कि वर्षा के दौरान यमुना मे कुछ थोड़ा बहुत जल नज़र आ जाता है, व बहाव में बहती दिखती है।

सरकार ने स्वयं संसद में स्वीकार किया है कि यमुना पर काम नहीं हो पाया है। संसद में सितम्बर 2009 में पर्यावरण एवं वन राज्य मंत्री जयराम रमेश ने नदियों और झीलों के प्रदूषण जांच पर ध्यानाकर्षण के जवाब में बताया कि नदी सफाई प्रोजेक्ट पर 17,000 करोड़ का खर्च करने के बावजूद नदियों की स्थिति वही है जो दो दशक पहले थी, उनमें कोई सुधार नहीं हुआ है, गंगा-यमुना साफ नहीं हो पाई है। उन्होंने कहा कि नदियों की सफाई के लिए दृढ़ संकल्प एवं नये प्रयासों की जरूरत है। पिछले वर्षों में मुख्य नदियों का प्रदूषण दबाव नगरीकरण एवं औद्योगीककरण के कारण और बढ़ा है। 1993 में लागू यमुना एक्शन प्लान के बाद 872.15 करोड़ रूपये खर्च होने के बावजूद यमुना के पानी की गुणवत्ता में कोई अंतर नहीं आया है, अपेक्षित सुधार भी नहीं हुआ। राज्यसभा में एक प्रश्न का जवाब देते हुए मंत्री ने बताया कि 753.25 मिलियन लीटर प्रतिदिन गंदे पानी के उपचार की क्षमता तैयार की गई है। 872.15 करोड़ रूपये यमुना पर खर्च हुए है मगर यमुना के पानी की गुणवता, सफाई में कोई अंतर नहीं पड़ा है। दिल्ली जल बोर्ड ने नजफगढ़, शाहदरा आदि जैसे मुख्य नालों की व्यवस्था के लिए योजना बनाई है।

फरवरी 2009 में दिल्ली के उपराज्यपाल ने दिल्ली नगर निगम द्वारा आयोजित एक यमुना रैली में घोषणा की कि यमुना प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए 15 अरब रुपयों का प्रोजेक्ट लागू होने को तैयार हैं जो मुख्य नालों के पानी की व्यवस्था करने के लिए नाला शोधन (उपचार) यंत्रों (एस.टी.पी.) के माध्यम से सुनिश्चित होगा कि केवल साफ पानी ही यमुना नदी में जाए।

कहा जाता है कि यमुना की मां संजना सूर्य का तेज न सह पाने के कारण छाया बनकर खुद दूर चली गई थी। उसी तरह यमुना दिल्ली का कचरा, मल, गंदगी ढोते-ढोते हमसे दूर अपना घर छोड़कर चली गई। मनुष्य ने अपने लोभ, लालच, लाभ के वशीभूत होकर यमुना को दिल्ली में बांध दिया,

मार दिया, मरनासन्न कर दिया। जीवन चाहिए तो यमुना को वापिस लाना होगा। हमें जीवन चाहिए तो यमुना को जीवित करना होगा, उसे बंधन, प्रदूषण, गंदगी मुक्त करना होगा। हम नहीं चेते तो प्रकृति का प्रकोप हमें सबक सीखाएगा ही। इस दुनिया में अनेक नदियों ने रास्ते बदले हैं, उनमें भारी बदलाव, परिवर्तन आए हैं। कई सभ्यताएं नष्ट हुई हैं, उनके अवशेष आज भी मिल रहे हैं। जहां समुद्र था वहां रेगिस्तान, पहाड़ बने है। समय रहते अगर हम नहीं चेते तो हमारी दशा और दिशा प्रकृति ही तय करेगी अन्यथा हमें युद्धस्तर पर नदी बचाओ के काम में लग जाना चाहिए। नदी का मतलब बहता पानी, मतलब जीवन, मतलब हरियाली, जीवन का आधार, विकास की राह, गतिशील जीवन, मानव, पशु-पक्षी, वनस्पति, जलजीव, कृषि व्यवस्था, सिंचाई, सुरक्षा, सीमा, पहचान, मेले, उत्सव, जलक्रीड़ा, बाग, बागवानी, प्लेज, फुलवाड़ी, यातायात, नाव (नैया) भ्रमण, तैराकी आदि। नदी मतलब जीवन, जीवन का आधार।

यमुना की पुकार, दर्द को समझना, जानना जरूरी है। मन में संकल्प, दृढ़ निश्चय, सपना हो तो कोई काम असंभव नहीं है। ईमानदारी से प्रयास करने की जरूरत है। मनसा, वाचा, कर्मणा से हमें यमुना मैया की जय बोलनी होगी। यमुना बचेगी तो जीवन बचेगा।

कालिया मर्दनः कभी यमुना में विष मिलने पर समाज ने अपना युग पुरुष उसमें उतार दिया था।

नदी गीत

नदिया धीरे बहो
कौन सुनेगा तेरी आह, नदिया धीरे बहो...
किसको है तेरी परवाह, नदिया धीरे बहो...

सभ्यताएं जनमी तट तेरे, संस्कृतियां परवान चढ़ी
तेरे आंचल के साये में सारी दुनिया पली बढ़ी
आज किसे एहसास...हो ऽऽऽ
नदिया धीरे बहो...

पहले तू माता थी सबकी, अब महरी सी लगती हो
पाप नाशनेवाली खुद ही सिर पे मैला ढोती है
तेरी पीड़ा अथाह ...हो ऽऽऽ
नदिया धीरे बहो...

इठलाने-बलखाने वाली अब बेबस हो बहती हो
कंचन काया वाली मईया काली-काली दिखती हो
बंध गये तेरी बांह ...हो ऽऽऽ
नदिया धीरे बहो...

तेरे पूत, कपूत हो गये- भूल गये तेरा सम्मान
ढूढंन से भी कहां मिलेंगे, राजा भगीरथ, कान्हा, राम
किससे करोगी फरियाद... हो ऽऽऽ
नदिया धीरे बहो...

तेरा घुट-घुट ऐसे मरना रंग एक दिन लाएगा
पानी रहते हुए विश्व जब बेपानी हो जाएगा
देगा कौन पनाह ...हो ऽऽऽ
नदिया धीरे बहो...

मुरारी शरण प्रसाद

शांतिमय समाज
Peaceful Society
A Gandhian Voluntary Organisation
KUNDAI 403115 GOA

Ph: 0832-2392236-7 · Fax: 2392382
E-mail: peacefulsociety@gmail.com
Web: www.peacefulsociety.org · www.goapanchayats.org